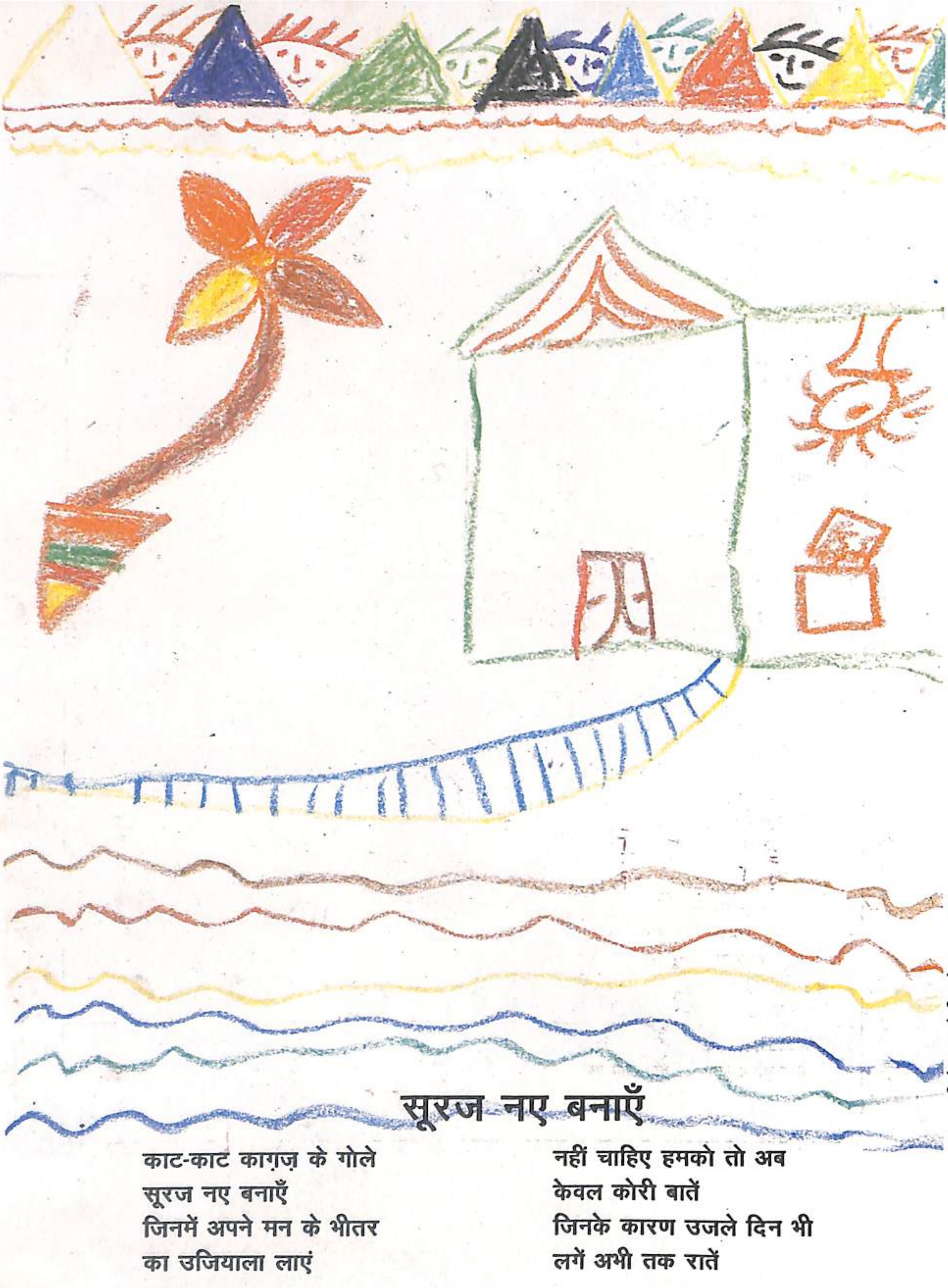
चकमक

जनवरी, 1997 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 5.00



नया साल मुबारक हो!



नीलोफर, चौथी, भोपाल, म.प्र.

सूरज नए बनाएँ

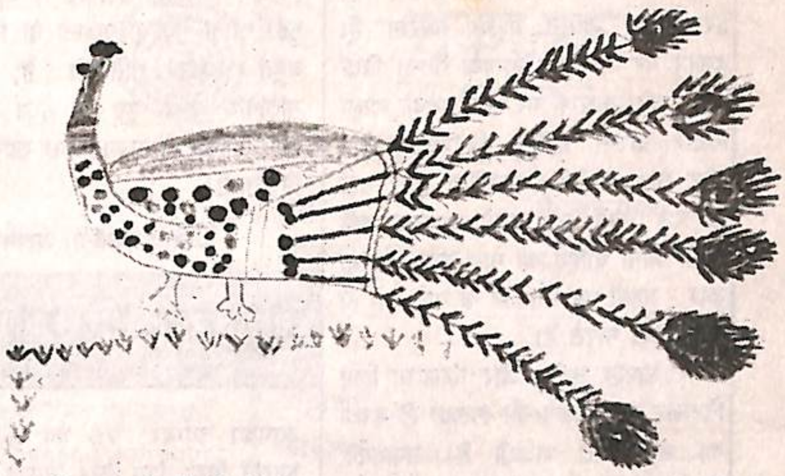
काट-काट काग़ज़ के गोले
सूरज नए बनाएँ
जिनमें अपने मन के भीतर
का उजियाला लाएं

दुनिया का नक्शा उन सबके
बीचों बीच उकेरें
जिसको किरनों की लकीर से
आसपास से घेरें

नहीं चाहिए हमको तो अब
केवल कोरी बातें
जिनके कारण उजले दिन भी
लगें अभी तक रातें

नई-नई आँखों से अब हम
नई रोशनी देंगे
अपने ये चमकीले सूरज
घर-घर में बोयेंगे

❑ प्रेमशंकर रघुवंशी



याशिका शर्मा, तीसरी, होशंगाबाद, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-12 अंक-7 जनवरी, 1997

सम्पादक
विनोद रायना

सह-सम्पादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

सम्पादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पाँच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ़्ट/चेक से **एकलव्य** *के नाम में पर भेजें। चैक में बैंक चार्ज रु. 15=00 अतिरिक्त जोड़ें।*

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फोन : 563380

137 वें अंक में ....

आवरण : ज्योत्सना, आठवीं, भावनगर, गुजरात

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

चकमक मोटे तौर पर अच्छी पत्रिका है अमूल्य सामग्री प्रकाशित करती है। हरएक के सामने प्रशंसा करता हूँ। दुकान पर भी जोर लगाया किन्तु बिक नहीं सकी। कारणों पर हम सबको थोड़ा विचार करना चाहिए। विदेशी परिवेश और लेखकों और तथाकथित हमारे यहाँ के बड़े नामों को इसमें शामिल नहीं किया जाना चाहिए जो मात्र मांग पर, या कुछ - बच्चों पर उपकार के नाते ऐसे ही कुछ लिख मारते हैं।

सरल सुबोध और जिज्ञासा लिए निरन्तर आगे पढ़ने की ललक ही बच्चों का मन जीत सकती है। संपादकों, लेखकों और पाठकों सबके दृष्टिकोण जुदा हों तो प्रसार में बाधा पड़ती है। मैंने बच्चों के लिए बहुत लिखा सिर्फ़ अपने तरीक़े से विश्वास के साथ -आपको उनमें से अधिकाँश रचनाएँ नहीं भाईं, इस पर कभी हम लोग मिलें तभी विस्तार से चर्चा हो सकती है।

❑ **हरदर्शन सहगल, बीकानेर, राजस्थान**

अक्टूबर, 96 अंक में आपने मेरे बेटे 'बंटी' का चित्र छापा है। इस हौसला अफ़ज़ाई के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। दरअसल जो काम मैं पिछले 3-4 साल से सोच रहा था, वो आपने किया। यानि कि कई वर्ष से बंटी चित्र बनाता था और मैं अपने पास रख लेता था कि चकमक को भेजूँगा। आख़िर उसने स्वयं भेजा। यह भी अच्छा ही हुआ स्वयं अपने बूते रचनात्मक प्रयास।

❑ **प्रेमपाल शर्मा, बड़ौदा, गुजरात**

मैं आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूँ, कारण कि मैं बच्चों को पढ़ाने में, अपनी ज्ञानवृद्धि में इसे बहुत सहायक पाता हूँ। आपको यह बताते हुए मुझे खुशी हो रही है कि मेरे साथ मेरा पाँच वर्ष का बेटा सत्री भी आपकी पत्रिका का इन्तज़ार करता है।

❑ **केशव साहू, शिक्षक, शा.उ.मा. विद्यालय, देवकर, दुर्ग, म.प्र.**

चकमक के पिछले अंक में रेसिपी (व्यंजन विधियाँ) देखकर मैं बहुत खुश हुई। खाना पकाना स्कूलों के लिए एक बहुत उम्दा गतिविधि है, क्योंकि गतिविधि करते हुए भी मज़ा आता है और आख़िर में सबको कुछ खाने को भी मिलता है!

❑ **रूथ रस्तोगी, लखनऊ, उ.प्र.**

पाठक लिखते हैं

आपका नवम्बर, 96 का अंक मिला। जिसमें दिया हुआ लेख 'नकल से बचो, मन का रचो' पसन्द आया। चकमक में पृष्ठ 22-23 पर दी हुई कहानी 'चूहा और बिल्ली' जो कि जगदीश प्रसाद साहू, सातवीं, गिधपुरी, रायपुर, म.प्र. ने लिखी है।

यह कहानी कक्षा सातवीं की अंग्रेज़ी पुस्तक में दी गई कहानी 'द टू माइस' का हिन्दी अनुवाद है। यह कहानी नकल की गई है और दो लाइनों का हेर-फेर किया है। इसके अलावा यह कहानी कुछ अन्य पुस्तकों में भी उलट-पलट करके दी गई, मगर कहानी का आधार एक-सा है। 'पूँछ' नामक एक पुस्तक में भी यही कहानी दी गई है।

जबकि 'नकल से बचो मन का रचो' में आपने लिखा था कि हम भी कभी-कभी गच्चा खा जाते हैं और इसी अंक में ऐसी लापरवाही, यह उम्मीद नहीं थी। अतः आप कोई भी रचना छापने से पहले जाँच-पड़ताल कर लें। हाँ, एक बात और। इस अंक में मुझे 'बस्ता' तथा 'हे ईश्वर' नामक कविताएँ बहुत पसन्द आईं।

आप चकमक में जो पहेलियाँ देते हैं उनके उत्तर भी होने चाहिए। यदि कोई पहेली नहीं बूझ पाए तो उत्तर मालूम होना चाहिए। रचनाएँ भले ही कमज़ोर हों लेकिन मन से लिखीं हों तो अच्छा है।

❑ **पारूल, सातवीं, टीकमगढ़, म.प्र.**

मुझे नवम्बर, 96 की चकमक देखने को मिली। यह पत्रिका वाकई बच्चों के लिए प्रेरणा देने वाली पत्रिका है। माथापच्ची कालम, कुछ कहानियाँ मुझे अच्छी लगीं। इसी तरह यह चकमक पत्रिका बच्चों का बहुमुखी विकास करती रहेगी एवं मार्गदर्शन देती रहेगी।

❑ **सरोज तिवारी, सहायक शिक्षिका शा.मा.वि. क्र.1, मुरार ग्वालियर, म.प्र.**

नवम्बर का अंक वैसे तो नन्हें रचनाकारों का अंक था, लेकिन आप इस बार भी गच्चा खा गए। बात यह है कि इस अंक में 'चूहा और बिल्ली' नामक रचना कक्षा सात की इंगलिश रीडर का एक पाठ है, जिसे हूबहू हिन्दी में रूपान्तरित करके भेजा गया है। आपने छाप दिया है। अब लेखक के बारे में आप चाहें सो करें।

❑ **दामोदर दयाल शर्मा, पीपरीपूठ, मुरैना, म.प्र.**

चकमक का नवम्बर, 96 अंक पढ़ा। यह अंक हमें बहुत रूचिकर लगा, बच्चों को चकमक ज्ञानवर्धक खिलौना लगता है। एक अंक को कई बार पढ़ते हैं और उस सामग्री पर परस्पर चर्चा करते हैं। इस अंक में हमारे ज़िले के एक छात्र के चित्र को स्थान मिला है, इससे हमें प्रसन्नता हुई।

❑ **साधना शुक्ला, भावना शुक्ला शा. कन्या, हाईस्कूल, सेवढ़ा, दतिया, म.प्र.**

रचनाकारों से ......

बहुत कोशिशों और सतर्कताओं के बावजूद हम लोग गच्चा खा रहे हैं। क्या हमारे साथ तुम सब चकमक के रचनाकार भी नकल से बचने की ज़िम्मेदारी बाँटोगे? काम जवाबदारी का है। करना यह है कि जब भी कोई रचना भेजो - कहानी, कविता या चित्र तो ध्यान रहे कि वह तुम्हारी अपनी हो। कहीं से मारी-टीपी हुई न हो।

तो चलो साथ मिलकर चकमक को बेहतर बनाएँ।

❑ **चकमक**

आपस की बात . . .

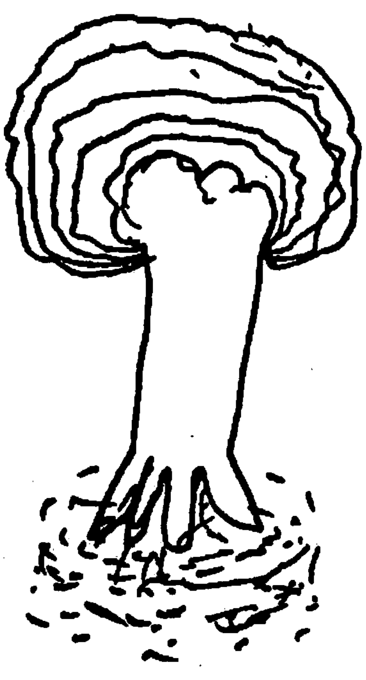
प्रिय पाठक,

आप सब चकमक से भली-भाँति परिचित हैं। पिछले 11 साल से चकमक नियमित रूप से निकल रही है और आज तक इसके 136 अंक निकल चुके हैं। अपने पहले अंक से ही चकमक ने बच्चों को अलग तरह की पाठ्य सामग्री के साथ ही अभिव्यक्ति का एक मंच उपलब्ध कराया है। हमारी ताकत रही है चकमक के पाठकों का उससे आंतरिक जुड़ाव, रचनाकारों, खासकर बाल-रचनाकारों द्वारा ली जा रही रुचि और उनके द्वारा दिया जा रहा सहयोग।

हमने चकमक की कीमत को हमेशा ही बाल पाठकों की खरीद क्षमता में रखने की कोशिश की है। इस कोशिश में *यूनिसेफ* के सौजन्य से लगातार मिल रहा निशुल्क कागज़ बहुत मददगार रहा है। फिर भी पिछले 11 सालों में कागज़, छपाई, डाकदर और अन्य खर्चों की बढ़ती कीमतों के दबाव में दो बार इसके दाम बढ़ाने पड़े। प्रकाशन शुरू करने के साढ़े तीन साल बाद चकमक की कीमत 2.50 रुपए से बढ़ाकर 4.00 रुपए की गई थी। फिर उसके भी साढ़े तीन साल बाद, जून 92 में कीमत 5.00 रुपए की गई।

तब से अब तक बहुत दबावों के बावजूद चकमक की कीमत को 5.00 रुपए ही रखा गया। इसके अलावा जिन क्षेत्रों में एकलव्य के स्कूली कार्यक्रम चल रहे हैं, वहाँ के बच्चों को एक माह बाद यह 2.00 रुपए की किफ़ायती दर पर उपलब्ध कराई जाती है। अब एक बार फिर स्थितियाँ ऐसी बन गई हैं कि हमें चकमक की कीमतें बढ़ानी पड़ रही हैं। बाज़ार की ताकतों के आगे झुके बगैर इसी स्तर की सामग्री स्वतंत्र रूप से आप तक पहुँचाते रह पाने के लिए यह जरूरी हो गया है।

1 अप्रैल, 1997 से चकमक की एक प्रति की कीमत होगी 7.00 रुपए।



☐ अनिता, चौथी, भोपाल, म. प्र.

यहाँ से काटें

चकमक
सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक

भेजना शुरू करें—

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

सदस्यता शुल्क रु. ....

.... माह/वर्ष के लिए

मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दर : 31 मार्च 97 तक

छह माह : 25.00 रुपए

एक साल : 50.00 रुपए

सदस्यता दर : 1 अप्रैल 97 से

छह माह :	40.00 रुपए
एक साल :	75.00 रुपए
दो साल :	140.00 रुपए
तीन साल :	200.00 रुपए
आजीवन :	750.00 रुपए *
आजीवन :	1000.00 रुपए ॰

* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

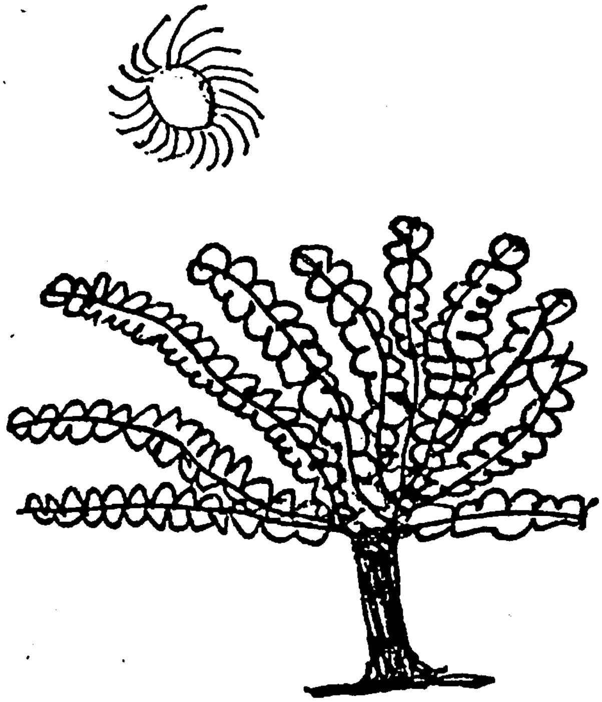
॰ इस सदस्यता पर एकलव्य के भावी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्य बनने के लिए शुल्क के साथ यह फॉर्म भरकर भेजें

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें —

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।



☐ राकेश गुप्ता, बालागुड़ा, मन्दसौर, म. प्र.

यहाँ से काटें

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

....

....

सदस्यता की नई दरें इस प्रकार होंगी -

छमाही	-	40 रुपए
सालाना	-	75 रुपए
दो साल	-	140 रुपए
तीन साल	-	200 रुपए

(सभी में डाक ख़र्च मुफ़्त)

31 मार्च, 1997 तक आगे के लिए चकमक का चंदा पुरानी दर यानी रु. *50.00* प्रतिवर्ष ही रहेगा।

चकमक के कई पाठकों, शुभचिंतकों ने पिछले कुछ सालों में आजीवन सदस्य बनने की इच्छा ज़ाहिर की है। अभी तक ऐसी कोई व्यवस्था हमने नहीं सोची थी। लेकिन भविष्य में पाठकीय आधार को मज़बूत बनाने और हमारे आपके रिश्ते को दीर्घजीवी बनाने के लिए आजीवन सदस्यता शुरू करने का निर्णय किया है। आजीवन सदस्यता की दो दरें हैं -

1. 750 रुपए की आजीवन सदस्यता के साथ हमारी ओर से आपके किसी दोस्त के लिए चकमक की एक साल की उपहार सदस्यता।
2. 1000 रुपए की आजीवन सदस्यता के साथ एकलव्य के सभी भावी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50 % छूट।

हमारी ताकत आप सब हैं। आपने सदस्य बनकर आर्थिक रूप से; रचनाएँ भेजकर चकमक तैयार करने में; और प्रतिक्रियाएँ भेजकर समीक्षक की तरह लगातार हमारा साथ दिया है। अब इस सदस्यता मुहिम में भी आपकी भागीदारी होगी और आगे भी आपका सहयोग हर तरह से जारी रहेगा ही, यही विश्वास है।

☐ एकलव्य समूह

चकमक के लिए
सदस्य बनें, बनाएँ



☐ चिन्ना फिलोमिना, सात वर्ष, भोपाल, म. प्र.



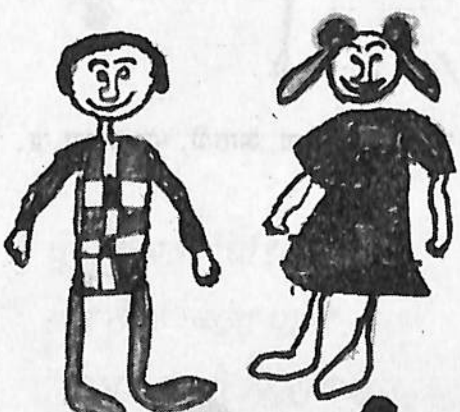
मेरे दोस्त हैं नटखट

मेरे दोस्त हैं नटखट
बहुत शरारत करते हैं
रोज़ दादी माँ को
बहुत तंग करते हैं
दादी माँ की बात बात में
बहुत हँसी उड़ाते हैं
मेरे दोस्त हैं नटखट
बहुत शरारत करते हैं
जहाँ मिलें हम दोस्त यार
खूब खेलते खूब नाचते
जहाँ मिलें मीठी चीज़ें
खा-खा कर जाते हैं
मेरे दोस्त हैं नटखट
बहुत शरारत करते हैं
माँ उनकी डाँटती हैफिर भी
बहुत शरारत करते हैं
फिर भी माँ किशन कन्हैया
कह कर पुकारती है
मेरे दोस्त हैं नटखट
बहुत शरारत करते हैं

□ योगेन्द्र नेताम, ग्यारह वर्ष, खरथा, चारामा, बस्तर, म. प्र.



□ दीपाली सोनी, आठवीं, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.







□ ममता चौधरी, धार, म. प्र.



□ ऋअंका सोनी, पाँचवीं, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

ग़लतफहमी

एक बार मेरे दोस्त ने अपने खेत पर बुलाया। मुझे यह नहीं पता था कि मेरे दोस्त का खेत कौन–सा है। मैं किसी और के खेत में चला गया। मुझे यह नहीं पता था कि यह किसका खेत हैं। मैंने समझा यह मेरे दोस्त का खेत है। मैं उस खेत के चने तोड़ने लगा। वहाँ के रखवाले ने देखा तो वह चिल्लाया उसने आके मुझे डाँटा। मैंने कहा मुझे ग़लतफहमी थी कि यह मेरे दोस्त का खेत है। रखवाले ने फिर भी मेरे कान खींचे।

□रीतेश कोठी, सातवीं, सिंगामपुर, दमोह, म.प्र.



□ सपना कनौजिया, आठवीं, भोपाल, म. प्र.

मेरी सहेली

सिखा मेरी सहेली है। एक दिन सिखा के जन्मदिन पर उसके मामा ने उसे उपहार में एक पेन दिया। दूसरे दिन उसका वह पेन गुम गया। हुआ यूँ की उसकी (सिखा की) बहन और मैं बाज़ार से पेंसिल ख़रीदकर आ रहे थे तो उसके घर की गली में पेन मिल गया। घर पेन देने गए तो देखा कि वह पेन के गुम जाने के कारण उदास बैठी थी। जैसे ही मैंने उसे पेन दिया वह खुशी से,उछल पड़ी। फिर हम तीनों खेलने चले गए।

□ गीता मिश्रा, तेरह वर्ष, भोपाल, म.प्र.



□ अर्पणा जोशी, सातवीं, टोंकखुर्द, देवास, म. प्र.



हकीकत की बातें

बात ग्राम सेनरा (नगरी) ज़िला रायपुर की है। गजराज नामक रावत के घर में सुबह चार बजे एक चीता ने घुसकर उनकी बकरी को पकड़ा तो बकरी चिल्लाई। उसकी आवाज़ सुनकर गजराज रावत जग गया और देखा तो चीता निकलकर भाग रहा था। वह भागते हुए पंचम के घर में घुस गया। वहाँ से निकलकर चन्दन के घर के आँगन में घुस गया। चन्दन की माँ ने बर्तन साफ़ करने को दरवाज़ा खोला तो चीता घर के अन्दर चला गया जहाँ चन्दन की बहन सो रही थी। चन्दन की माँ ने कुत्ता समझकर उसे डराया तो वह निकलकर दूसरे की बाड़ी में चला गया। और वहाँ से भाग गया।

दो–तीन दिन बाद हन्डूराम के घर में एक धान का बोरा पड़ा था। तो एक आदमी ने उसे अंधेरे में देखा और चिल्लाया कि चीता यहाँ सोया हुआ है। बहुत से आदमी इकट्ठा हो गए। सभी अंधेरे में थे। मेरे घर में मेरे पिता जी का एक किसान टार्च रखा हुआ है। उसे लेकर मैं गया और जलाकर देखा तो वह एक धान का बोरा था। उसे देखकर सभी लोग हँसने लगे। और हँसते–हँसते सभी अपने घर वापस चले गए।

□ **वीरेन्द्र कुमार साहू, आठवीं, सेमरा, रायपुर, म. प्र.**

पहेलियाँ

(1)
दिन में मुर्दा रात में जिया
लो तुम्हें बतला भी दिया

(2)
साहब आए, कोट उतारा,
कुँए में कूद गए

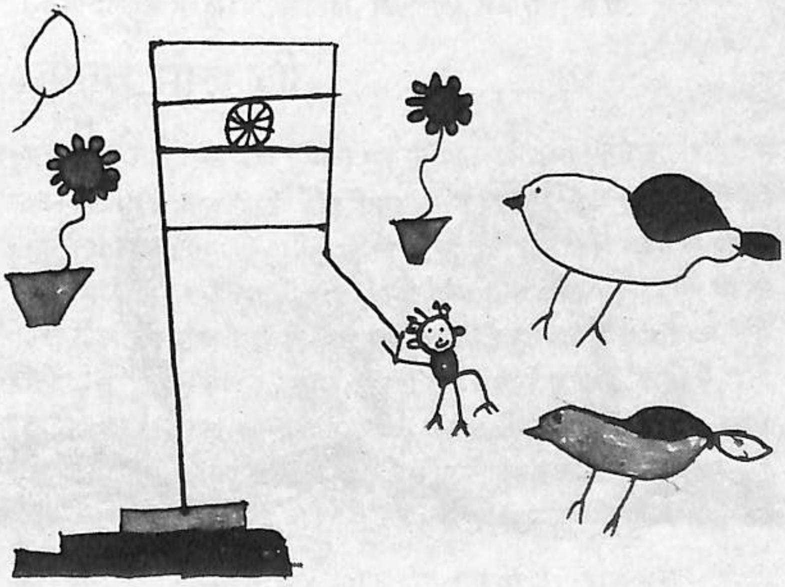
(3)
जंगल में की बाँदरी, घर छिपाए कान
घी शक्कर की खाने वाली घूरे पे मकान

□ **अभिषेक, आशीष, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.**

चिड़िया रानी

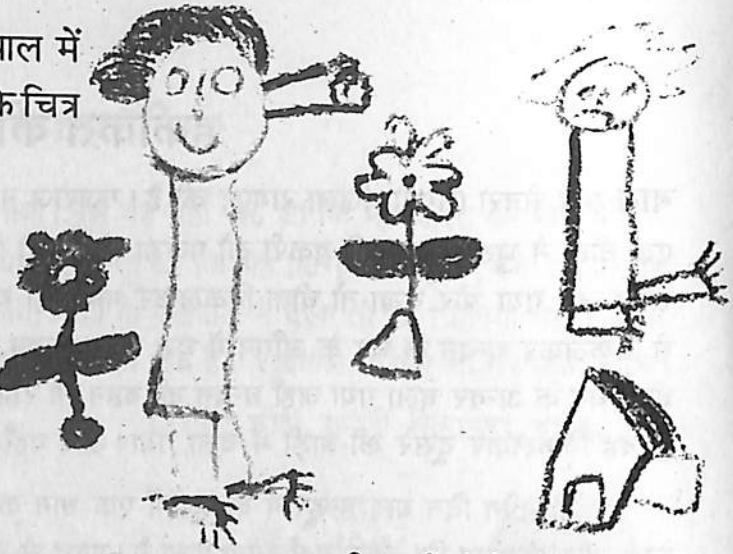
चूँ-चूँ करती चिड़िया रानी
लेने आई दाना पानी
दिनभर उड़ती फिरती है
यह मेहनत करती फिरती है
एक डाल पर बैठी है
देख रही है चारों ओर
मिल जाए दाना पानी
हो जाए बच्चों की भोर।

□ **आदित्य पुखार, सातवीं, बैहर, बालाघाट, म.प्र.**

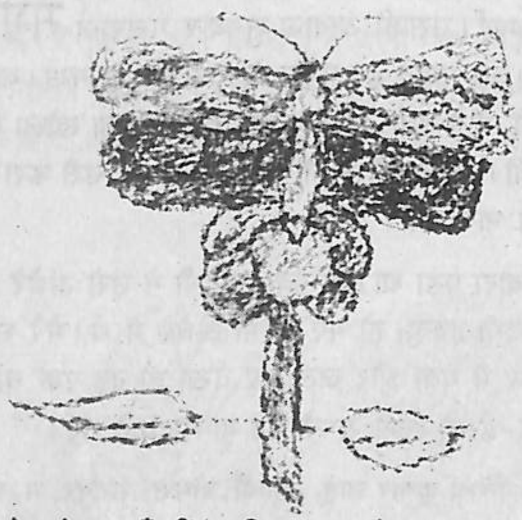


मेरा पन्ना

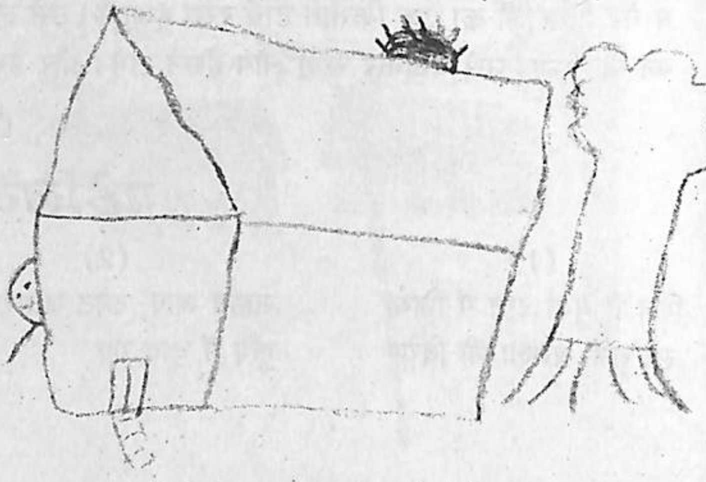
राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान भोपाल में आयोजित गतिविधियों में बने बच्चों के चित्र



□ अनीता, बाँसखेड़ी, भोपाल, म.प्र.



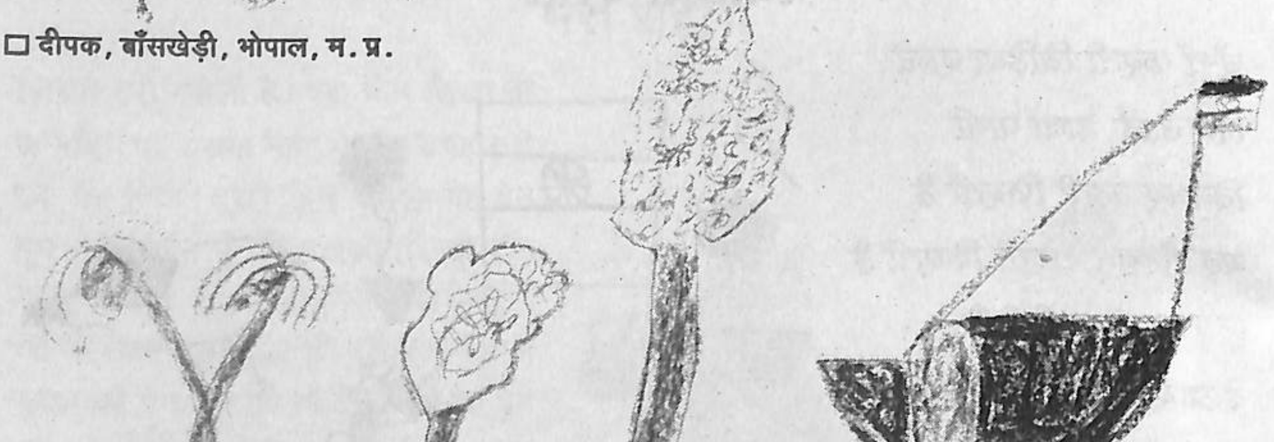
□ मो. शोएब, पाँचवीं, आरिफ नगर, भोपाल, म.प्र.



□ अशरफ खान, पहली, बाँसखेड़ी, भोपाल, म. प्र.



□ दीपक, बाँसखेड़ी, भोपाल, म. प्र.



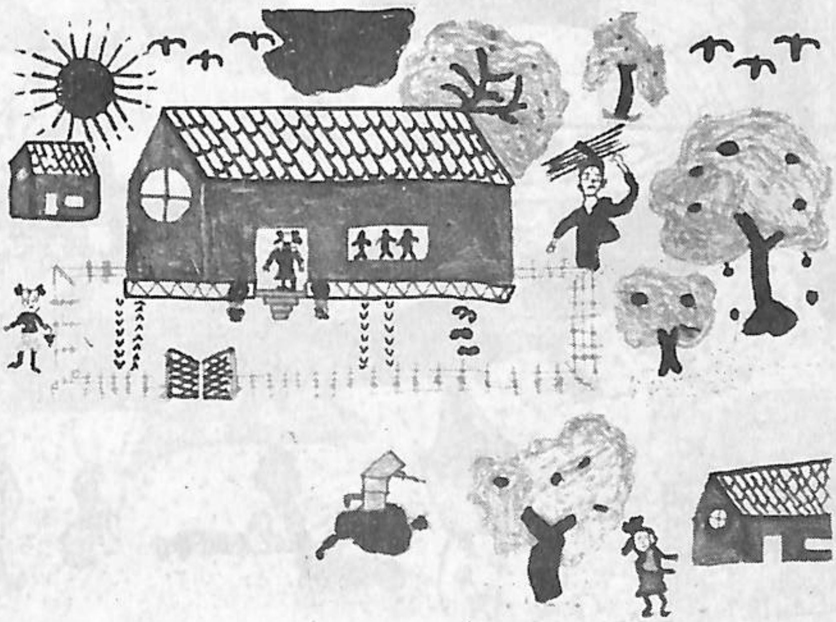
□ निकहत, भोपाल, म. प्र.



मेरी बिल्ली बड़ी शैतान

एक दिन मैं मेरी सहेली के घर गई। मेरे साथ मेरी बिल्ली भी थी। हम वहाँ खूब खेले कूदे। फिर हमने चाय पी और घर के लिए रवाना हुए। इतने में मेरी बिल्ली को एक चूहा दिखा और वह उसके पीछे दौड़ी। दौड़ते–दौड़ते उसने मेरी सहेली के घर के बर्तन खिलौने तोड़ डाले। शोर सुनकर उसकी मम्मी आई और बोली ये सब किसने तोड़ा है। उसने कहा, इसकी बिल्ली ने और उसकी मम्मी ने मुझे बहुत डाँटा। मैंने मेरी सहेली से कट्टी कर ली और घर आ गई।

□ अंजू, सातवीं, धार, म.प्र.



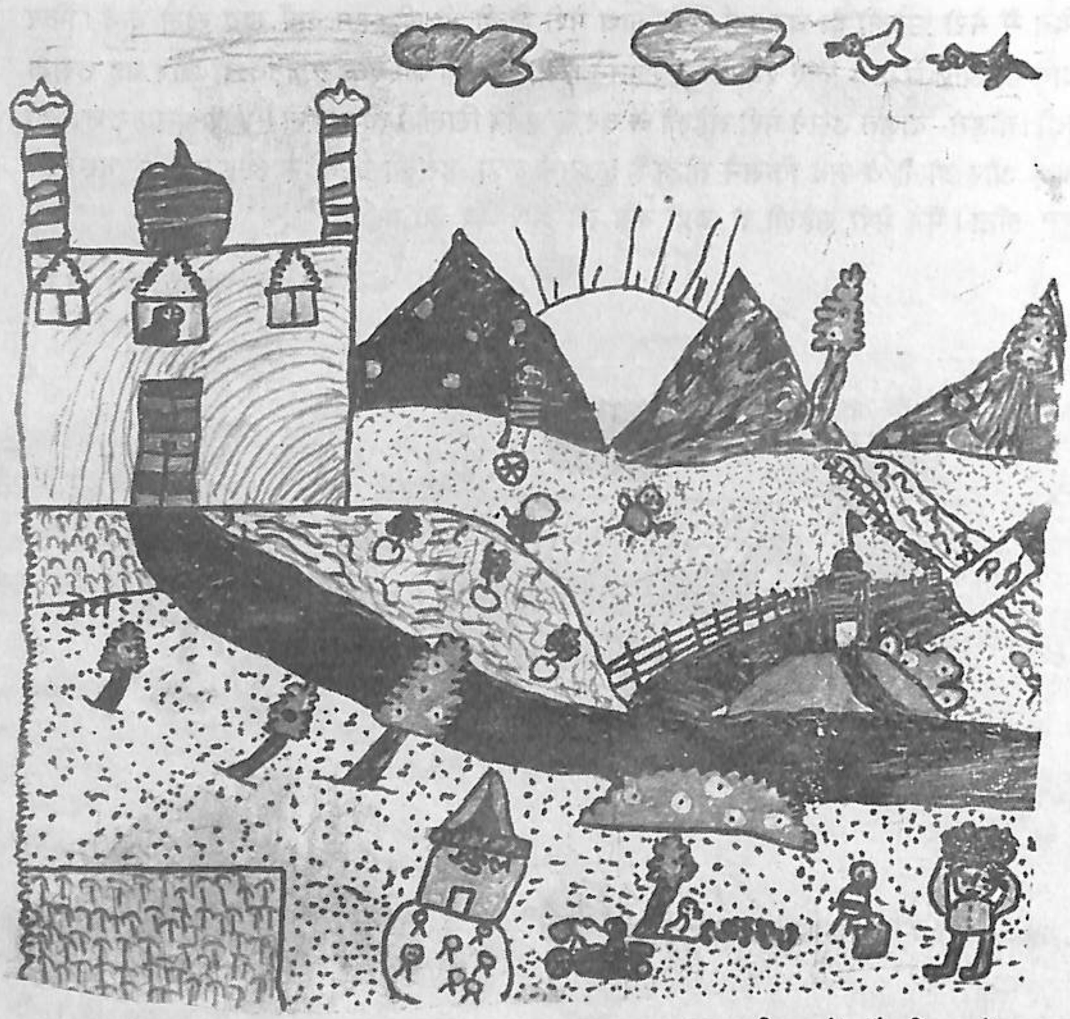
□ गेन्दालाल नरवरिया, आठवीं, बिलपांक, रतलाम, म.प्र.

आफत मोल ली

एक आदमी था वह अपने चाचा की गाड़ी लेकर शहर गया। वह एक दुकान पर पहुँचा। वह टोपा पहने था। गाड़ी में उसने टोपा निकालना चाहा लेकिन नहीं निकला। उसने सामान लिया और शहर के बाहर एक पेड़ था, वहाँ उसने गाड़ी रोक दी और वहाँ पर उसने टोपे को निकालना चाहा। लेकिन टोपा नहीं निकला। वह घर गया और दादी से बोला, ये सामान। दादी ने सामान ले लिया। दादी बोली, दादा बाहर हैं। वहाँ दादा, चाचा और तीन आदमी बैठे थे। दो तो पहलवान जैसे लग रहे थे। फिर वो चाचा,दादा से बोला, ये टोपा नहीं निकल रहा। उसने बहुत कोशिश की पर नहीं निकला। दोनों पहलवानों ने ताक़त लगाई फिर भी टोपा नहीं निकला। उसकी मुण्डी दुखने लगी। फिर किसी ने कहा रुको थोड़ी देर रुको, फिर नरम हाथों से निकाला तो निकल गया। चाचा, दादा बोले ये फँस कैसे गया था। फिर उसने लगाकर बताया तो फिर से फँस गया। फिर उसने नरम हाथों से निकाला तब भी नहीं निकला। पहलवानों ने भी ताक़त लगाई तब भी नहीं निकला। चाचा ने कहा इसे लोहा काटनी से काट दो। इस तरह उसने दुबारा आफत मोल ली।

□ सुनील कुमार गौर, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

हमारी सैर

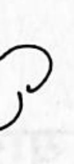


□ आषीश दुबे, पाँचवीं, उज्जैन, म.प्र.

मैं अपने दोस्तों के साथ लगभग 7 बजे घर से निकला। पहले तय कर चुके थे कि हम यहाँ से 4 कि.मी. दूर बैजनाथ महादेव जाएँगे। पहले हम वहाँ पक्के कोटा रोड से गए। हम पैदल जा रहे थे। अतः मस्ती करते हुए एवं खेलते हुए जा रहे थे। हम वहाँ लगभग एक घण्टे में पहुँचे। वहाँ जाकर हमने प्रसाद, अगरबत्ती ख़रीदी और भगवान भोलेनाथ की पूजा की और प्रसाद बाँटा। फिर हम घूमने लगे। हमने वहाँ स्थित और मंदिर जैसे हनुमान, शबरी आश्रम, कमल कुण्ड आदि देखे। लगभग 10 बज गए थे। हमने वहाँ की दुकानों पर से भेलपुड़ी, पानीपुड़ी खाई और घर आने लगे। तब मेरे दोस्त ने कहा कि अब मेरे खेत की तरफ से कच्चे रास्ते से चलेंगे। हम चलने लगे रास्ता बहुत ख़राब था। हम खेत में गए वहाँ भुट्टे की फसल थी। हमने आठ दस भुट्टे तोड़े और दूसरे दोस्त लकड़ियाँ लाए। और हमने भुट्टे सेंके, खाए हमारा पेट भर गया। हम घर आए तब हमारे पापा मम्मी ने डाँटा क्योंकि हम कहकर नहीं गए थे और लगभग एक बज गया था। हमने जब कहा कि हम तो मंदिर गए थे तब वे शांत हो गए।

□ देवेन्द्र कोठारी, ग्यारहवीं, आगर मालवा, म.प्र.





नए वर्ष पर

नए वर्ष पर दादा जी की
दाढ़ी यदि काली हो जाती

नए वर्ष पर नानी जी के
गालों पर यदि लाली आती

नए वर्ष पर मम्मी-डैडी
यदि जाते सारा दुःख भूल

नए वर्ष पर अगर चाँद में
लगने लग जाता स्कूल

नए वर्ष पर यदि यह रूखी
रोटी रसगुल्ला हो जाती

नए वर्ष पर यदि कोयल
आकर मेरे आँगन में गाती

नए वर्ष पर अगर तितलियाँ
मेरे संग खेलतीं खेल

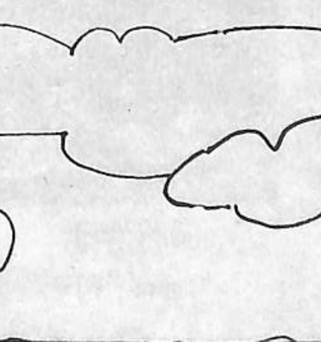
नए वर्ष पर यदि हो जाता
इन प्यारी चिड़ियों से मेल

तो जूतों में पंख लगाकर
उड़ जाने को कभी ना कहता

परियों को भी नमस्कार कर
हँसी-खुशी धरती पर रहता

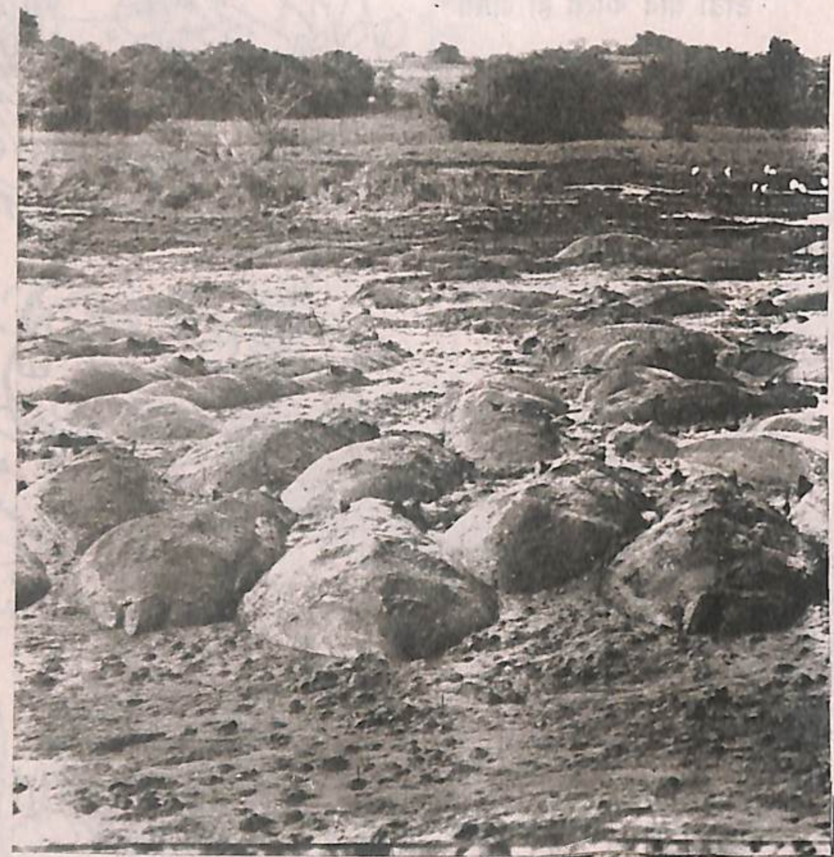
❑ सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
चित्र : शोभा घारे





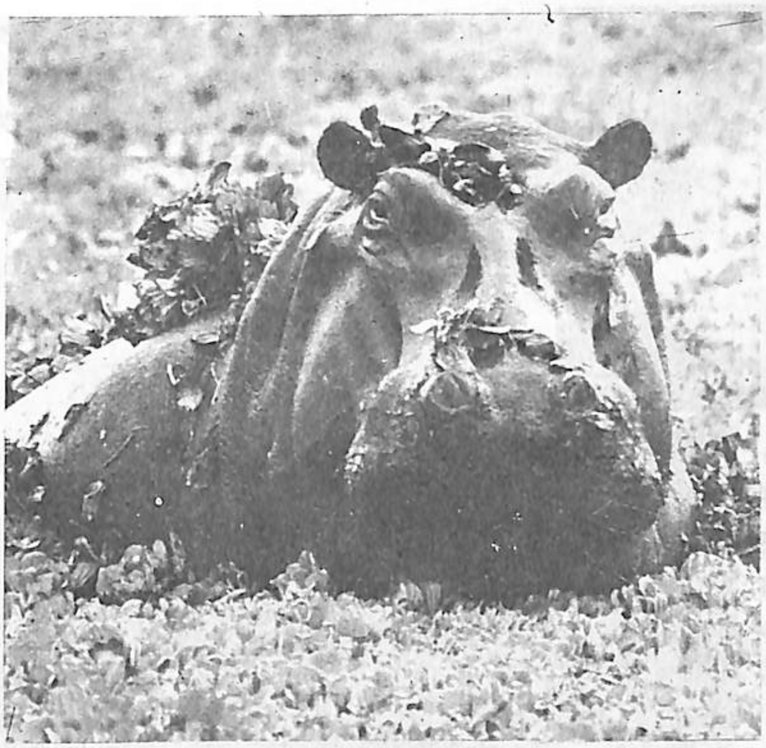
आओ मिलें दरियाई घोड़े से

इस बार हम कीचड़ और दलदल में पड़ी इन चट्टानों के बारे में ही थोड़ी बातचीत करेंगे। इनसे पहचान भी करेंगे और हो सके तो दोस्ती भी।





पर यह क्या? इनमें से कुछ तो हिलडुल रही हैं। जैसे कि जीवित हों। अरे, एक तो उठकर खड़ी हो गई। अरे यह तो चट्टान है ही नहीं। दरियाई घोड़ा है। चलो इससे ही जान-पहचान कर लेते हैं।



यूँ दिखता है यह सामने से। इसका अंग्रेज़ी में नाम है हिप्पोपोटामस। यह स्तनपायी उभयचर जीव है। पानी में भी मस्त रहता है और सूखे में भी।



यह है इसके बचपन का चित्र। यह हिप्पो (अंग्रेज़ी में इसका यही प्यार का नाम है) अभी कुछ ही महीनों का है। देखो यह अपनी माँ के सिर के बराबर भी नहीं। लेकिन जानते हो, इसका वज़न एक नवजात इन्सान के बच्चे के वज़न से लगभग बारह गुना है!



पर मज़ेदार बात यह कि इतना भारी-भरकम होने के बाद भी यह बच्चा चुस्ती-फुर्ती में पीछे नहीं होता। जन्म के पाँचेक मिनट बाद ही यह चलने-फिरने ही नहीं दौड़ने और तैरने भी लग जाता है। यहाँ यह बच्चा रास्ता दिखा रहा है और दो बड़े पीछे-पीछे चले आ रहे हैं।



दरियाई घोड़ा अफ़्रीका नामक देश का मूल निवासी है। यानी क्या? यानी वही उसका देश है। वहीं की आबोहवा, खान-पान, पेड़-पौधों के बीच वह रहता है। पहले-पहले तो वह अफ़्रीका की हर नदी के आसपास पाया जाता था। पर अब वह उत्तरी अफ़्रीका से बिल्कुल ग़ायब हो गया है।



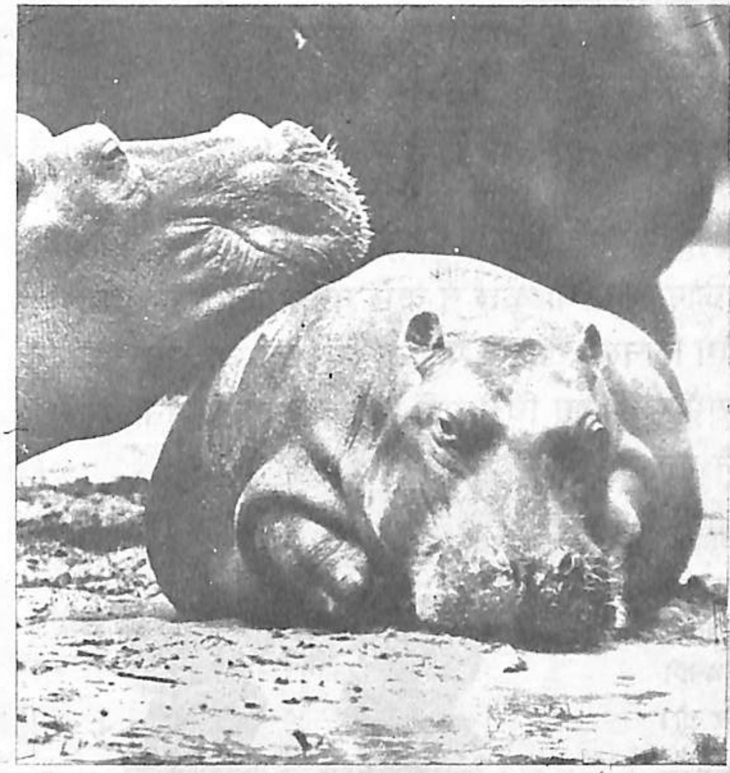
कभी-कभी ये पानी के नीचे भी दौड़ लगाते हैं। आमतौर पर तो ये इस तरह 5-6 मिनट ही रहते हैं पर ज़रूरत पड़े तो पानी के नीचे आधे घण्टे तक भी रह सकते हैं। पर इससे अधिक नहीं।



यह इनके गुस्सा होने का इशारा है। हिप्पो ने अपना मुँह फाड़ा तो कभी यह न समझ लेना कि उबासी ले रहा है। यह हमला करने की तैयारी की निशानी है।

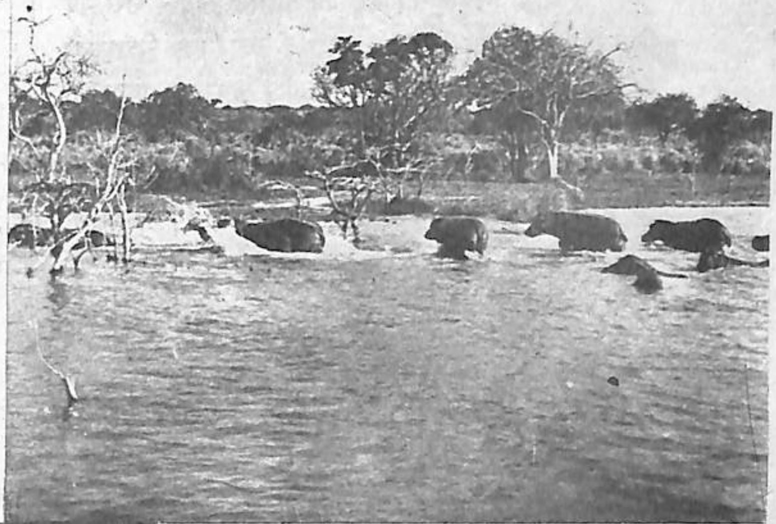


यह देखो अगला चरण। लेकिन नहीं-नहीं। ये दो हिप्पो आपस में लड़ नहीं रहे हैं। यह इनके प्यार जताने का भी तरीक़ा है। पर कभी-कभी यह मुद्रा ज़ोरदार लड़ाई के पहले भी देखने को मिल जाती है।



दिन भर ये हिप्पो या तो पानी में तैरते, डूबते-उतराते रहते हैं या रेत में पड़े रहते हैं धूप सेंकते हुए।

पर जब भूख लगे या शाम घिर आए तो ये पानी में से बाहर निकलकर जंगल या झाड़ियों के दौरे लगाते हैं - दानापानी नहीं-नहीं, सिर्फ़ दाने, की तलाश में।



यह हिप्पो की ही एक अलग प्रजाति का सदस्य है। आकार में यह लगभग बड़े हिप्पों का एक तिहाई ही होगा। शायद इसीलिए इसका नाम बौना (पिग्मी) हिप्पो है। रंग भी इसका कुछ गाढ़ा होता है और शरीर के बालों के छेदों में से निकलने वाले चिकने पदार्थ की बदौलत इसका रंग चमकता रहता है।



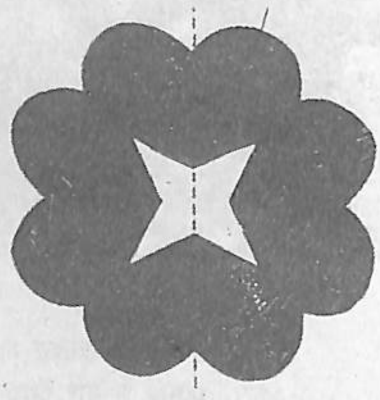
(चित्र अफ्रिकन एनिमल जायंट्स, वाईल्ड लाईफ़ इन्सायक्लोपीडिया, एनिमल ऑफ़ द ट्रॉपिकल फॉरेस्ट, अफ्रीका तथा मैमल्स इन्सायक्लोपीडिया ऑफ़ किंगडम से साभार)

नए साल के कार्ड

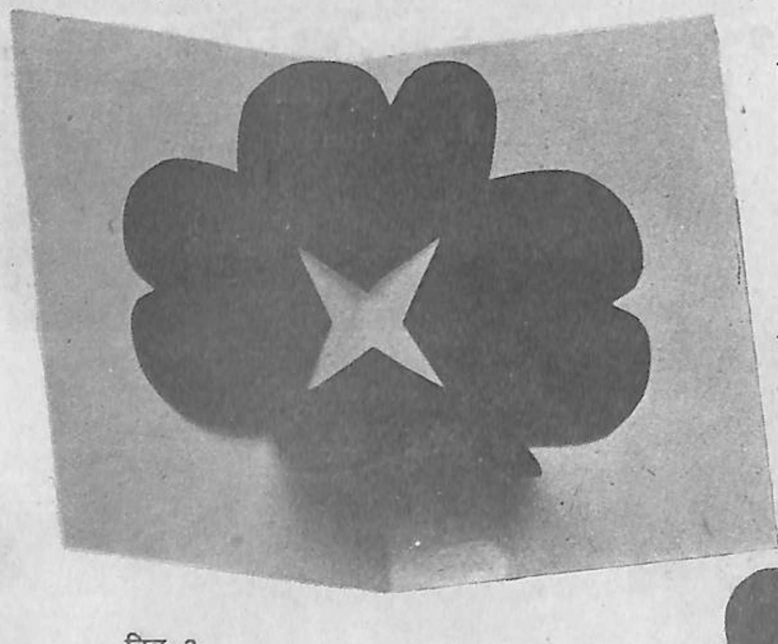
नए साल के मौके पर अपने दोस्तों को बधाइयाँ और बधाई कार्ड भेजते वक़्त हर बार हम सोचते हैं कि कुछ नई डिज़ाइन बनाई जाए। तुम भी कुछ न कुछ नए प्रयोग करते ही होगे। अच्छा, तुमने इस तरह के कार्ड देखे होंगे जिनको खोलने पर अन्दर कोई आकृति अचानक उभरकर सामने आ जाती है। यानि इसमें फूल का चित्र नहीं बल्कि फूल ही बनाकर रख देते हैं। इसी तरह का एक कार्ड बनाने का तरीक़ा यहाँ दे रहे हैं।

सबसे पहले कार्ड बनाने के लिए मोटा काग़ज़, कैंची, गोंद वग़ैरह इकट्ठे कर लो। हल्के रंग के काग़ज़ से तो कार्ड बना लो। जितना बड़ा तुम चाहो यानि जितना बड़ा तुम्हारे पास काग़ज़ हो और जितने कार्ड तुम्हें बनाने हों उसके अनुसार। इसे बीच से मोड़कर दोहरा कर लो।

अब कोई दूसरे रंग का काग़ज़ लेकर उस पर चित्र में दिखाए गए फूल की आकृति उतार लो। फिर उसे कैंची से काट लो। अब एक काम और करना है, फूल की आकृति को चित्र–1 में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से मोड़ लो।



चित्र–1

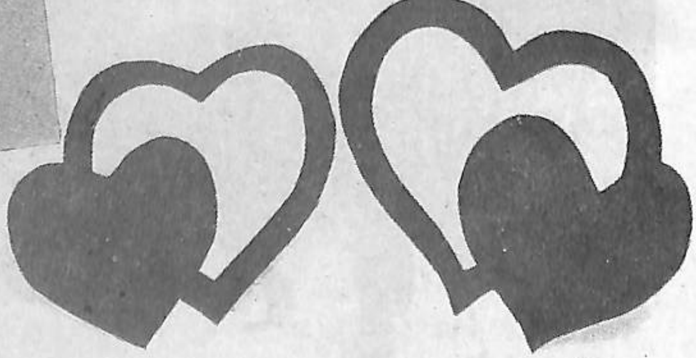


चित्र–3

पहले बनाए कार्ड के अन्दर इस फूल की आकृति को गोंद से चिपका लो। इसे चिपकाते समय कुछ बातें ध्यान में रखना ज़रूरी है –

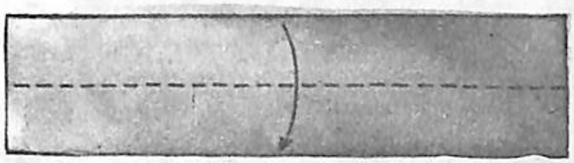
1. फूल की आमने–सामने की पंखुड़ियों में बने मोड़ कार्ड में बने मोड़ के ठीक ऊपर हों।
2. कार्ड की दाईं और बाईं ओर की परतों पर जो एक–एक पंखुड़ी आ रही है उसे ही गोंद से चिपकाना है।

कार्ड तैयार है। अपने दोस्त को जो लिखना चाहो लिख लो और ऊपर से भी चाहो तो कार्ड को सजा लो।



चित्र–2

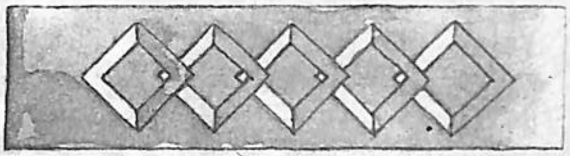
कार्ड को और भी मन चाही डिज़ाइनों से तैयार कर सकते हो। वैसे कार्ड को ऊपरी तरफ से सजाने के लिए सीधी–सादी डिज़ाइन काटकर तो चिपकाई ही जा सकती हैं या चाहो तो थोड़ा अपने दिमाग़ पर ज़ोर डालकर कुछ मजेदार डिज़ाइनें बना लो। एक तरीक़ा कार्ड सजाने का हम यहाँ बता रहे हैं। तुम इन चित्रों को देखकर ही समझ जाओगे कि क्या करना है। फिर भी चित्रों के क्रमानुसार लिखे हुए को पढ़कर कोशिश करो।



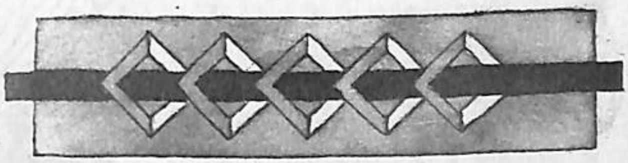
1. चित्र में दिखाए अनुसार काग़ज़ की एक पट्टी बना लो। उसे बीच से मोड़कर दोहरा कर लो।



2. फिर मुड़ी हुई इस पट्टी पर चित्र के अनुसार निशान बना लो और लगाए हुए निशानों पर से कट लगा लो।



3. कट लगाने के बाद पट्टी को खोल लो। और कट लगे हुए हिस्सों को उठाकर दूसरी दिशा में मोड़ लो।



4. फिर इस आकृति में एक पतली लम्बी पट्टी चित्र के अनुसार पिरो लो। कट लगे हुए मुड़े सिरों को पट्टी पर गोंद से चिपका दो।

बस अब इस पट्टी को कार्ड पर चिपकाते समय ख़्याल रखना कि लम्बी पट्टी कार्ड पर न चिपक जाए। क्योंकि इसे ही पकड़कर तुम आकृति को ऊपर नीचे कर सकोगे। पट्टी को ऊपर–नीचे करके देखो। है न, मजेदार।



मेरे पापा

क्या बोलूँ कैसे हैं पापा
बड़े भुलक्कड़ मेरे पापा।

कितनी बार कहा है मैंने
रोज़ शाम को मुझे घुमाना
पर 'सॉरी' कहकर पापा ने
सीख लिया है पिंड छुड़ाना।

इस गन्दी आदत से उनकी
करवानी होगी ही टाटा।

मम्मी कहती जल्दी आना
मैं भी कहती जल्दी आना
जाने क्यों पर मेरे पापा
सीख गए हैं हमें सताना

बड़ी मुसीबत मेरी तो है
कब समझेंगे जाने पापा..'

एक दोस्त है मेरी 'बुलबुल'
उसको 'कोयल' कह देते हैं
चीज़ मँगाती हूँ मैं लेकिन
भैया को आ दे देते हैं।

क्या बतलाऊँ उनकी बातें
बड़े अनोखे मेरे पापा।

मुझको एक अचम्भा भारी
कैसे ऑफ़िस वे जाते हैं
सड़क और ऑफ़िस को कैसे
याद भला वे रख पाते हैं!

कुछ भी हो पर मुझको प्यारे
बहुत बहुत लगते हैं पापा।

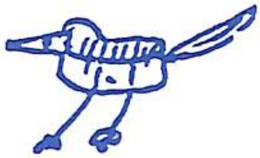
❑ दिविक रमेश



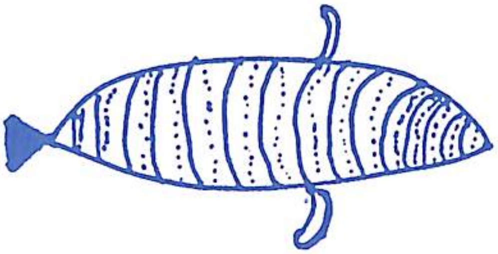
1997

अगस्त

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31



राकेश पोरवाल, सातवीं, बालगुड़ा, मन्दसौर, म. प्र.



आरती शर्मा, महीदपुर रोड, उज्जैन, म. प्र.

अक्टूबर

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

दिसम्बर

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

छुट्टियाँ

18 जुलाई मिलाद–उन–नवी
15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस
18 अगस्त रक्षा बंधन
25 अगस्त जन्माष्टमी
2 अक्टूबर गाँधी जयंती
11 अक्टूबर दशहरा
30 अक्टूबर दीपावली
14 नवम्बर गुरू नानक जयंती
18 दिसम्बर गुरू घासीदास जयंती *
25 दिसम्बर बड़ा दिन

* केवल म. प्र. के लिए

एकलव्य, ई– 1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल– 462 016 म. प्र. फोन – 563380

जनवरी

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		



जीवन शर्मा, चौथी, धार, म. प्र.

मार्च

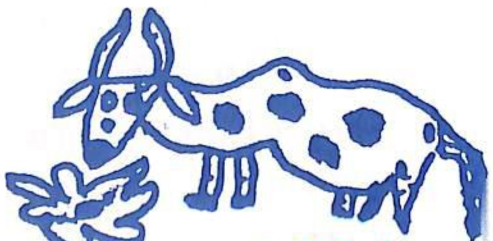
सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30



रितु चौबे, आठवीं, भोपाल, म. प्र.

मई

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	



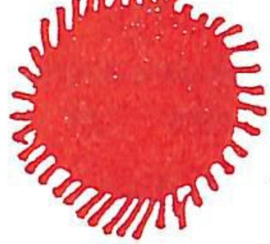
अम्बुज खरे, पाँचवीं, दतिया, म. प्र.

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

बॉर्डर : सुनीता खनवे, छठवीं,
भादूगाँव (गंजाल), टिमरनी, म. प्र.

सम्पर्क

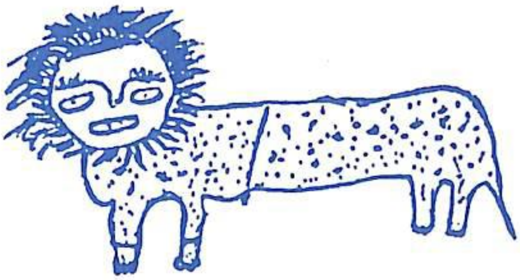


अंकित पोरवाल, तीसरी, सांवेर, म. प्र.

1997

फरवरी

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		



शिवनारायण चौहान, सातवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

अप्रैल

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

जून

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

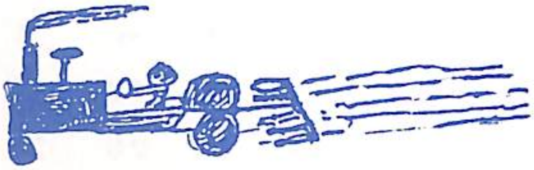
छुट्टियाँ

10 फरवरी ईद–उल–फितृ
22 फरवरी संत रविदास जयंती *
7 मार्च महाशिवरात्रि
24 मार्च होली
28 मार्च गुड फ्रायडे
14 अप्रैल अम्बेडकर जयंती *
16 अप्रैल राम नवमी
18 अप्रैल ईदुज्जुहा
22 मई बुद्ध पूर्णिमा
* केवल म. प्र. के लिए

: **एकलव्य**, ई– 1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल– 462 016 म. प्र. फोन – 563380

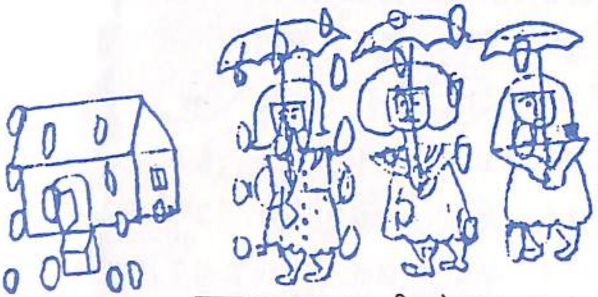
जुलाई

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			


बलरामसिंह तेकाम, सातवीं, भादूगाँव, टिमरनी, म. प्र.

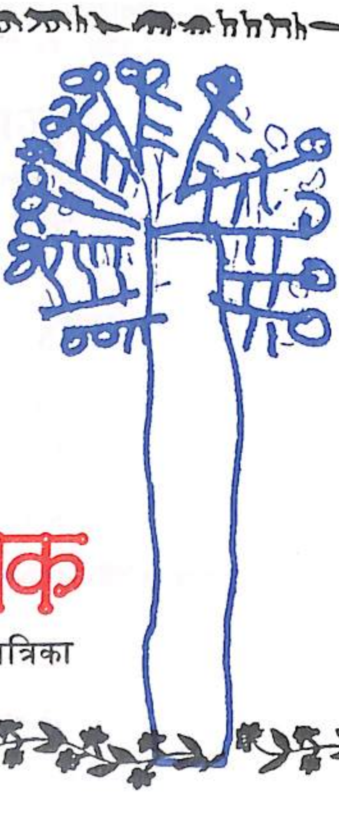
सितम्बर

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					


रामलाल, छतरगढ़, बीकानेर, राजस्थान

नवम्बर

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30


रामअवतार महाजन, सातवीं, चौकड़ी, म. प्र.

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

बॉर्डर : सुनीता खनवे, छठवीं,
भादूगाँव (गंजाल), टिमरनी, म. प्र.

सम्पर्क :



जापानी कहानी

नए साल की टोपियाँ

❑ योशिको उछीदा

एक समय की बात है। जापान की ऊँची पहाड़ियों पर एक बहुत दयालु बूढ़ा आदमी और बूढ़ी औरत एक घर में रहते थे। वे स्वभाव के बहुत ही अच्छे थे पर बहुत ग़रीब थे। बूढ़ा आदमी बेंत की टोपियाँ बनाकर अपनी जीविका कमाता था। ये टोपियाँ किसान धूप और बारिश से बचने के लिए पहनते थे। पर बूढ़ा आदमी साल भर में बहुत अधिक टोपियाँ बनाकर नहीं बेच पाता था।

जाड़े के एक सर्द दिन जब साल ख़त्म होने को था, बुढ़िया ने बूढ़े से कहा, "भले आदमी, जल्दी ही नया साल आने वाला है, पर हमारे घर में तो खाने तक को कुछ नहीं है। ताज़े चावल की एक हण्डी के बग़ैर हम नए साल का स्वागत कैसे करेंगे?" उसके चेहरे पर चिन्ता की एक लकीर छाई थी। ख़ाली अलमारियों की ओर देखते हुए उसने एक दुखभरी उसाँस छोड़ी।



बूढ़े ने उसके कन्धे थपथपाए और कहा, "अरे, फ़िक्र न करो। मैं कुछ टोपियाँ बनाऊँगा और उन्हें बेचने गाँव जाऊँगा। उनसे जो पैसे मिलेंगे उससे नए साल की दावत के लिए कुछ मछलियाँ और चावल खरीदूँगा।"

नए साल के एक दिन पहले अपनी बनाई हुई बेंत की पाँच नई टोपियाँ लेकर बूढ़ा आदमी गाँव की ओर निकल पड़ा। कड़ाके की ठण्ड थी और भोर से ही बर्फ़ आसमान से लुढ़ककर उनके छोटे-से घर के आसपास बड़ी-बड़ी हिमराशियों के रूप में जमा हो रही थी। बूढ़ा आदमी ठण्डी हवा में ठिठुर रहा था, पर वह ताज़े गर्म चावल और जलते कोयले पर सिककर भूरी, कुरकुरी होती मछली के बारे में भी सोच रहा था। वह जानता था कि यह सब ख़रीदने के लिए उसे कुछ पैसे कमाने ही पड़ेंगे। उसने अपना ऊनी मफ़लर अपनी गर्दन के आसपास और कस लिया और बर्फ़ से ढकी सड़क पर धीरे-धीरे बढ़ चला।

जब वह गाँव पहुँचा तो तंग गलियों में, "बेंत की टोपी ले लो! बेंत की टोपी!" चिल्लाता घूमने लगा। पर सब लोग नए साल की तैयारियों में इतने व्यस्त थे कि किसी ने बेंत की टोपियों की ओर ध्यान ही नहीं दिया। वो उसके पास से जल्दी-जल्दी गुज़र जाते, नए साल की दावत के लिए समुद्री मछली, लाल सेम, ताज़े पानी की मछली की दुकानों की ओर। किसी ने बूढ़े आदमी या उसकी टोपियों की ओर देखा तक नहीं।

बूढ़ा आदमी गाँव में भटकता रहा। बर्फ़ का गिरना और तेज़ हो गया। जल्दी ही आसमान में अंधेरा घिर आया। बूढ़े आदमी को समझ में आ गया कि अब और भटकने का कोई फ़ायदा नहीं। मछलियों की दुकान के पास से गुज़रते हुए उसने बड़ी हसरत से कतारों में टँगी ताज़ी मछलियों की ओर देखा और एक लम्बी साँस छोड़ी।

'काश मैं अपनी पत्नी के लिए मछली का एक छोटा-सा टुकड़ा ही घर ले जा पाता?' उसने उदास होकर सोचा। पर उसकी जेबें तो उसके पेट से भी ज़्यादा ख़ाली थीं।

अब उन पाँच अनबिकी टोपियों को लेकर घर लौट जाने के अलावा कोई चारा न था। बूढ़ा थका-हारा पहाड़ों पर बसे अपने छोटे-से घर की ओर लौट पड़ा। ठण्डी हवा की चुभन से बचने के लिए वह सिर झुकाए था। चलते-चलते वह जीज़ो, बच्चों के रखवाले देवता, की छह पत्थर की मूर्तियों के पास से गुज़रा। वे

सड़क किनारे खड़ी थीं। उनके सिर और कन्धों पर छोटी-छोटी हिमराशियाँ इकट्ठा होकर जम गई थीं।

'ओह हो, तुम तो बर्फ़ से ढक गए हो,' बूढ़े ने मूर्तियों से कहा और अपनी टोपियाँ नीचे रखकर वह उनके सिर पर जमी बर्फ़ झाड़ने लगा। जैसे ही वह चलने वाला था, उसे एक अनोखी बात सूझी।

'माफ़ करना, वैसे ये वो बेंत की टोपियाँ हैं जो मैं बेच नहीं पाया,' उसने क्षमा माँगी, 'पर कम से कम ये तुम्हारे सिर को बर्फ़ से बचाएँगी।' और बड़े जतन से उसने जीज़ो की पाँच मूर्तियों के सिर पर एक-एक टोपी बाँध दी।

'अब अगर मेरे पास एक टोपी और होती तो फिर तुम्हारा सिर भी ढक जाता,' वह छठवीं मूर्ति की तरफ देखते हुए बुदबुदाया। फिर अगले ही पल उसने खुद के सिर पर लगी टोपी उतारी और आख़िरी मूर्ति के सिर पर बाँध दी।

'बस', खुश होते हुए उसने कहा, 'अब तुम सबके सिर ढके हुए हैं।' फिर, सिर झुकाकर विदाई लेते हुए उसने मूर्तियों से कहा कि उसे जाना होगा। 'तुम सबको नए साल की मुबारकबाद' कहकर वह संतुष्ट होकर जल्दी-जल्दी चल पड़ा।

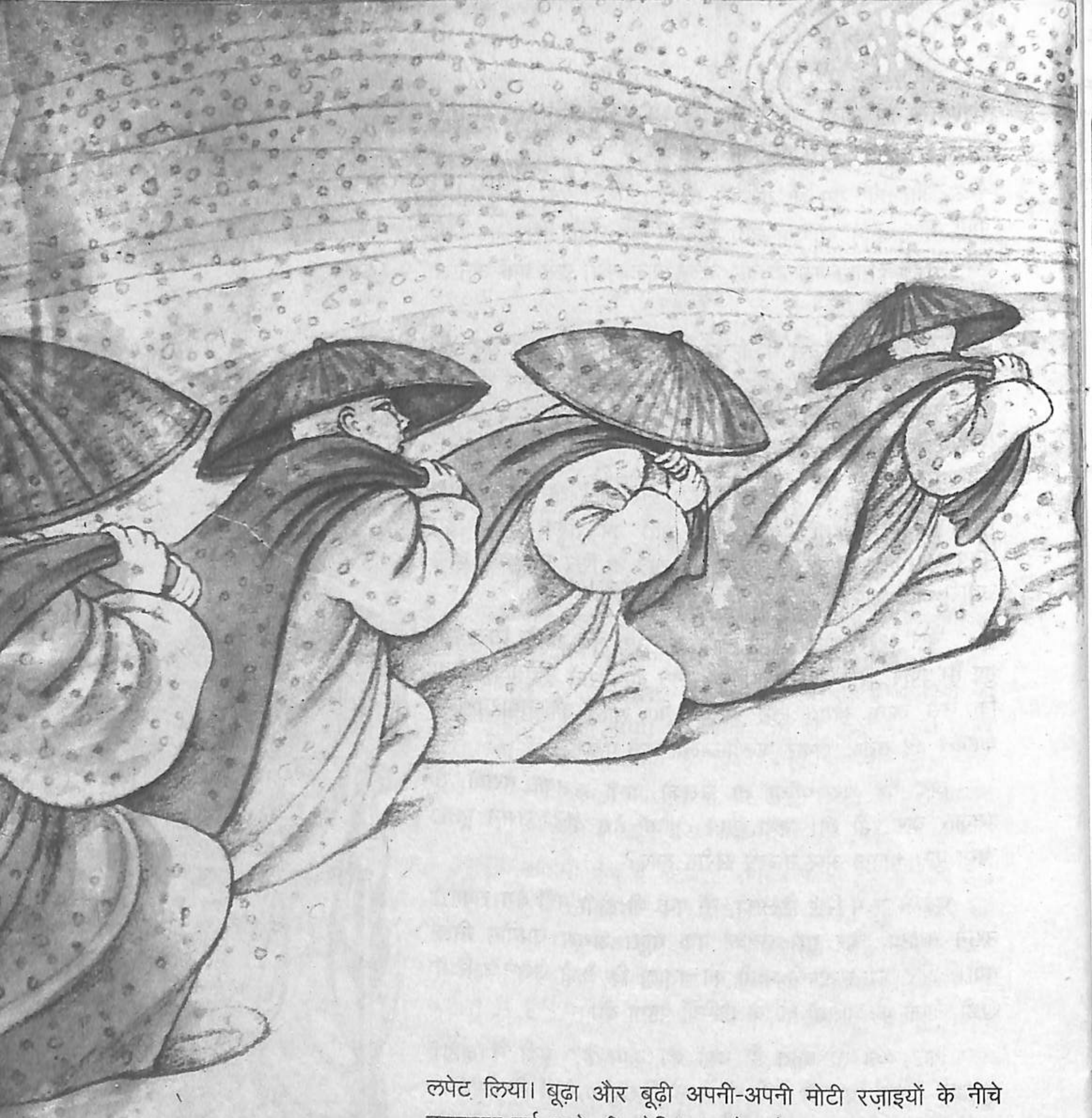
जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी उसका बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी। "क्या तुमने टोपियाँ बेच दीं?" उसने पूछा, "क्या कुछ चावल और मछली ख़रीद लाए?"

बूढ़े ने न में सिर हिलाया, "मैं एक भी टोपी नहीं बेच सका," उसने बताया, "पर मुझे उनका एक बहुत अच्छा उपयोग मिल गया।" और उसने अपनी पत्नी को बताया कि कैसे उसने बर्फ़ में खड़ी जीज़ो की मूर्तियों को वो टोपियाँ पहना दीं।

"वाह, यह तो बहुत ही दया का काम है," बूढ़ी ने कहा। "तुम्हारी जगह अगर मैं होती तो मैं भी बिलकुल ऐसा ही करती।" उसने ज़रा भी इस बात कि शिकायत नहीं की कि बूढ़ा खाने को कुछ लेकर नहीं लौटा था। बल्कि उसने थोड़ी-सी गर्म चाय बनाई और आख़िरी कोयले के टुकड़ों में से एक को सिगड़ी पर रख दिया ताकि वे अपने को गरमा सकें।

उस रात वे जल्दी ही सोने चले गए क्योंकि और कोयला नहीं बचा था और घर ठण्डा होने लगा था। बाहर हवा बर्फ़ को एक सफ़ेद पर्दे की तरह उड़ाती रही जिसने उस छोटे से घर को





लपेट लिया। बूढ़ा और बूढ़ी अपनी-अपनी मोटी रज़ाइयों के नीचे दुबककर गर्म रहने की कोशिश करने लगे।

"हम खुशकिस्मत हैं कि ऐसी रात को हमारे सिर पर एक छत तो है," बूढ़े आदमी ने कहा।

"बेशक," बूढ़ी ने सहमति जताई, और जल्दी ही दोनों गहरी नींद में सो गए।

भोर के आसपास, जब आसमान अब भी धुँधला भूरा-सा हो रहा था, बूढ़ा आदमी बाहर कुछ आवाज़ें सुनकर जाग गया।



"सुनो," उसने बूढ़ी को हिलाया।

"क्या है?" बूढ़ी औरत ने पूछा।

उन दोनों ने साथ-साथ अपनी साँसें रोककर सुनने की कोशिश की। आवाज़ से लगता था कि आदमियों का कोई झुण्ड बहुत भारी बोझ खींच रहा हो।

"हेई शा! होई शा! हेई शा! होई शा!" आवाज़ें आ रही थीं और वो पास, और पास आती हुईं महसूस हो रही थीं।

"इतनी सुबह कौन हो सकता है?" बूढ़े ने सोचा। फिर उन्हें गाने की आवाज़ सुनाई दी-

"उस दयालु बूढ़े आदमी का कहाँ है घर,
जिसने ढक दिए थे हमारे सर?
उस दयालु बूढ़े आदमी का कहाँ है घर,
जिसने हमें टोपियाँ दीं बचाने को सर?"

दोनों बाहर देखने के लिए खिड़की की तरफ दौड़े। उन्होंने देखा कि छह की छह पत्थर की मूर्तियाँ, जीज़ो उनके घर की ओर बढ़ी चली आ रही हैं। वे अब भी वही बेंत की टोपियाँ पहने थीं जो बूढ़े ने उनके सिर पर बाँधी थीं। और हरेक एक बहुत भारी बोरा खींच रही थी।

"हेई शा! होई शा! हेई शा! होई शा!" कहते हुए वे क़रीब, और क़रीब आती जा रही थीं।

"ये तो यहीं आती लग रही हैं!" बूढ़े आदमी ने अचम्भे से कहा। पर बूढ़ी औरत तो इतनी आश्चर्यचकित थी कि कुछ बोल ही न पाई।

उनके देखते-देखते ही हरेक जीज़ो मूर्ति ने अपना-अपना बोरा उनके घर की देहरी पर रखा और चलती बनीं।

बूढ़ा आदमी दरवाज़ा खोलने के लिए हड़बड़ाया। जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला छह बड़े बोरे लुढ़ककर अन्दर आ गए। उन बोरों में चावल, गेहूँ, मछली, सेम, गर्म और ठण्डे पेय, केक और ऐसी ही हर तरह की लज़्ज़तदार चीज़ें थीं।

"अरे, यहाँ तो इतना सामान है कि हर रोज़ साल भर तक दावत खाई जा सकती है!" बूढ़े ने आश्चर्य से कहा।

"और हम इस बार नए साल की इतनी शानदार दावत करेंगे जितनी ज़िन्दगी भर में कभी नहीं की," बूढ़ी औरत ने खुश होकर कहा।

"ओ जीज़ो सामा, शुक्रिया!" बूढ़े आदमी ने चिल्लाकर कहा।

"ओ जीज़ो सामा, हम तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा करें?" बूढ़ी ने ज़ोर से कहा।

पर वे छह पत्थर की मूर्तियाँ तब तक धीरे–धीरे सड़क पर दूर जा चुकी थीं। बूढ़े और बूढ़ी के देखते-देखते ही वे गिरती हुई बर्फ़ की सफ़ेदी में ओझल हो गईं। सिर्फ़ उनके पैरों के निशान बर्फ़ पर बचे रह गए जिससे पता चलता था कि वे वहाँ आई थीं।

सभी चित्र : मार्क ब्राउन
(चाइल्ड क्राफ्ट सीरीज़ की हॉलीडे एंड बर्थडे से साभार।
अंग्रेज़ी से अनुवाद : दुलदुल विश्वास)





जाड़े में

नींद नहीं आती है भैया,
रात-रात भर जाड़े में!

ऐसी शीतलहर चलती है
लगे कि ज्यों हड्डी गलती है।
तन पर दो-दो धरें रजैया
रात-रात भर जाड़े में!

ओस कुहासा कुहरा पाला
आकर सबने डेरा डाला।
रंभाए खूँटे पर गैया
रात-रात भर जाड़े में!

बिन वर्षा के टप-टप पानी
गिरा पेड़ से, है हैरानी।
दुबकी बैठी रही चिरैया
रात-रात भर जाड़े में!

खों-खों-खों-खों करती नानी
भूल गई सब कथा-कहानी।
परेशान कर रहा जड़ैया
रात-रात भर जाड़े में!

❑ राजनारायण चौधरी
चित्र : हुताराम अधिकारी



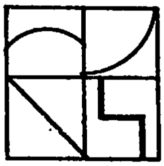
माथापच्ची

(1)

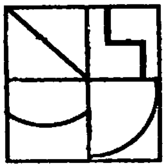
जब धरम अपने पिता की आज की उम्र का हो जाएगा तब उसकी उम्र उसके बेटे की अभी की उम्र से पाँच गुना होगी। तब तक उसका बेटा भी धरम की आज की उम्र से आठ साल ज़्यादा का हो चुका होगा। अभी धरम और उसके पिता की उम्रों का जोड़ 100 है। अब तुम जोड़–घटाकर तीनों की सही–सही उम्र पता करो।

(2)

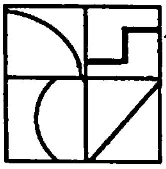
क्या चित्र ख और ग चित्र क को ही घुमा–फिराकर बनाए गए हैं?



क



ख



ग

(3)

मुझे अलका, रशीद और शबाना को कुछ पैसे देने हैं। मुसीबत यह है कि मेरे पास सारे पैसे अठन्नियों में हैं। मेरे पास कुल 4700 अठन्नियाँ हैं। मुझे अलका को शबाना से 500 रुपए कम और रशीद को अलका से 400 रुपए कम देने हैं। अब जल्दी से बताओ कि यह बँटवारा कैसे करें।

(4)

चार साल बाद रानू की उम्र 16 साल पहले की उसकी उम्र से पाँच गुना हो जाएगी। पर सवाल तो यह है कि आज क्या है उसकी उम्र?

(5)

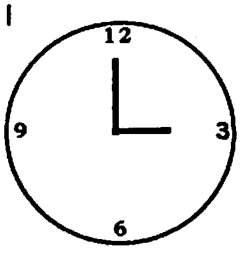
कुछ सवाल बहुत आम–सी चीज़ों के बारे में। ऐसी चीज़ें जिन्हें हम अक्सर देखते हैं, पर शायद ध्यान से नहीं। चलो जँचाई कर लें, पर ध्यान रखना, जवाब ईमानदारी से देना।

1. गाँधी जी वाले एक रुपए के डाक टिकट में गाँधी जी का चेहरा बाईं ओर को मुड़ा हुआ है या दाईं ओर?
2. आजकल नए चले 25 पैसे के सिक्के पर बने गेंडे का मुँह बाईं ओर है या दाहिनी ओर?
3. आमतौर पर घड़ी के विज्ञापनों में उसके काँटे एक निश्चित समय बताते हैं। कितना समय?
4. जिल्द वाली किताबों की जिल्द पर किनारे पर जो नाम लिखा होता है, वह किस ओर को झुका रहता है? दाएँ या बाएँ?
5. पचास पैसे के एक डाक टिकट पर दूध क्रान्ति को चित्रित किया गया है। उस पर कुछ मवेशी, मटके ले जाती एक महिला और दूध की बोतलें गहरे नीले रंग में बनी हैं। याद करके बताओ कि उस पर कितनी दूध की बोतलें बनी हैं?

(6)

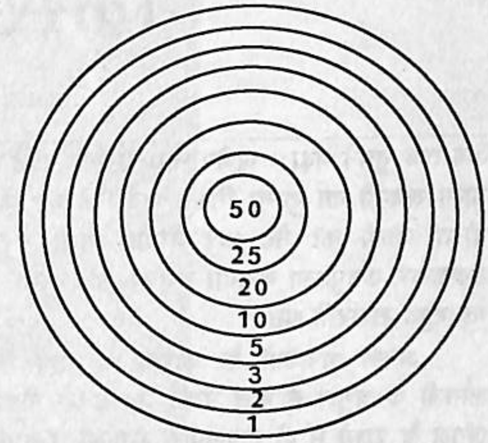
यह तो तुमने देखा ही होगा कि जब घड़ी में तीन बजते हैं तो उसके काँटों के बीच समकोण होता है – यानी उनके बीच 90° डिग्री का कोण होता है।

सोचकर बताओ कि तीन बजे के बाद फिर कब इन काँटों के बीच 90° डिग्री का कोण बनेगा?

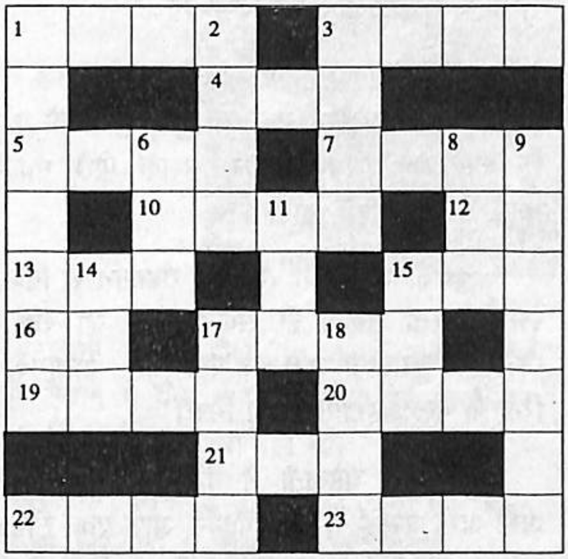


(7)

गुड़िया और बबलू, दोनों भाई बहन कार्तिक के मेले में घूमने गए। काफ़ी कुछ खा–पी लेने के बाद वे खेल वाली दुकानों की ओर पहुँचे। तीर चलाने वाली दुकान पर दोनों ने निशाना लगाया। दोनों को एक–एक रुपए में तीन–तीन बार निशाना लगाने का मौका मिला। दिलचस्प बात यह है कि दोनों के तीर बिल्कुल एक–से गोलों में लगे। दोनों को कुल नम्बर मिले 96 बता सकते हो कौन–से गोलों में लगे थे उनके तीर?



वर्ग पहेली –67



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. किसी की तरफ घूर–घूरकर देखना (4)
3. जो मन को बहलाए, अच्छा लगे (4)
4. आलिम–––, विद्वान व्यक्ति (3)
5. पाँच सिद्धांतों पर आधारित शांति समझौता (4)
7. शाहबाद का राजा (4)
10. जश तरंग में ढूँढो मोहरों का खेल (4)
12. मुलाहिजा फ़रमाइए बुराई पर (2)
13. मय दो, दूसरा (3)
15. किसी चीज की कमी, अभाव (3)
16. काज (2)
17. चार दास का अच्छा व्यवहार (4)
19. यह महीना (4)
20. आधा बोलो तो ज़रा–सा, पूरा बोलो तो घूरना (4)
21. तहलका में है वह जो भारी नहीं (3)
22. तानपुरा की काटछाँट में बहुत दिनों से चला आने वाला (4)
23. जार के नाम में लीन होना (2,2)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. एक ही पहल से दो काम हासिल करना, एक मुहावरा (2,2,1,2)
2. फाल तक है ज़िम्मेदारी (4)
3. साहसी व्यक्ति (4)
6. बखशीश मनाने में पेड़ ढूँढो (3)
8. जो सुन्दर हो, अरबी में (3)
9. बाल, दाढ़ी आदि बनाना (4,3)
11. रंजी ट्रॉफी दा मामला है, दुखी न हो (3)
14. एक राग (3)
15. सूर्य का एक और नाम (3)
17. हरी नस एकदम खुल्लमखुल्ला है (4)
18. जो चापलूसी करे (4)

पेज 7 की पहेलियों के उत्तर
1. दिया, 2. केला, 3. पत्तल

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली – 67 का हल अप्रैल, 1997 के अंक में देखें।

धारावाहिक-8

क़िस्सा बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा : जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा - बुरातीनो। वह बहुत शरारती था।

अपनी शरारतों के कारण वह एक बिल्ले और लोमड़ी के चंगुल में फँस गया। जब उनसे पीछा छूटा तो जंगल के रास्ते में दो नकाबपोश डाकुओं से बचते हुए एक छोटे-से घर के सामने पहुँचा। डाकू उससे सोने के सिक्के चाहते थे, जो बुरातीनो ने अपने मुँह के अन्दर रखे थे। डाकुओं ने उससे सिक्के छीनने की बहुत कोशिश की और फिर उसे बलूत के पेड़ पर लटकाकर ढाबे की तलाश में निकल गए।

बुरातीनो रात भर लटका रहा। सुबह उसे पास के घर में रहने वाली लड़की नीलकेशिनी ने देखा तो उसे पेड़ से उतरवाया और घर के अन्दर ले गई। जल्दी से उसने डाक्टर घुग्घू और हकीम टिड्डामल को बुलवाया और इलाज करने के लिए कहा। उन्होंने इलाज शुरू किया। अगले दिन नीलकेशिनी ने बुरातीनो को पहले शिष्टाचार सिखाने की कोशिश की और फिर पढ़ाने की। और फिर तंग आकर बुरातीनो को अन्धेरी कोठरी में बन्द करवा दिया। अब आगे पढ़ो ...

बुरातीनो मूरखनगरी में पहुँचा

नीलकेशिनी कोठरी के दरवाज़े पर आकर बोली, "बुरातीनो, मेरे दोस्त, अब तो अपनी ग़लती मान लीजिए।"

वह बहुत नाराज़ था और फिर उसका ख़्याल कुछ और ही था, "हुँ, बड़ी ज़रूरत पड़ी है न!"

"तब तो सुबह तक कोठरी में ही बन्द रहना पड़ेगा....,"

लड़की ने दुखी मन से गहरी साँस ली और वहाँ से चली गई।

रात हो गई। कोठरी में उल्लू ने ठहाका लगाया, मेंढकी तहख़ाने से रेंगकर बाहर निकल आई ताकि वह डबरों में चाँद के प्रतिबिम्ब पर छपाका लगाने का सुख उठा सके।

लड़की अपने पलंग पर सो गई और नींद में देर तक दुखभरी हिचकियाँ लेती रही। आर्तेमोन अपनी दुम में नाक गड़ाए उसके शयनकक्ष के दरवाज़े पर ही सो रहा था। घर की दीवार घड़ी ने बारह बजाए। आधी रात हो गई।

चमगादड़ छत से नीचे उतर आया, "चलो, चलने का समय हो गया! उधर कोने में चूहों ने तहख़ाने से कोठरी में आने का रास्ता बना रखा है। मैं बाहर तुम्हारा इन्तज़ार करूँगा!"

वह रोशनदान के रास्ते बाहर उड़ गया। मकड़ियों के जालों में उलझता हुआ बुरातीनो कोठरी के कोने की तरफ लपका। उसके पीछे मकड़ियाँ क्रोध से फुफकारने लगीं।

बुरातीनो चूहों के रास्ते से तहख़ाने से निकलने लगा। रास्ता सँकरा ही सँकरा होता जा रहा था। जैसे-जैसे बुरातीनो आगे बढ़ रहा था.... अचानक वह सिर के बल तहख़ाने में जा गिरा।

वहाँ वह चूहेदानी में फँसते-फँसते बचा, कि अभी-अभी रसोई में दूध पीकर आए एक साँप की दुम पर उसने पैर रख दिया, और आख़िर तहख़ाने में बिल्लियों के आवागमन के रास्ते से बाहर निकल गया।

आसमानी फूलों के ऊपर चमगादड़ धीरे-धीरे उड़ रहा था, "चलो, बुरातीनो, मेरे पीछे-पीछे मूरखनगरी की ओर बढ़ते चलो!"

चमगादड़ों के दुम नहीं होती, इसलिए ये पक्षियों की तरह सीधा नहीं उड़ पाते, बल्कि अपने झिल्लीदार पंखों की मदद से ये ऊपर-नीचे उड़ते हुए रास्ता तय करते हैं। उनका मुँह हमेशा खुला रहता है, ताकि उड़ते-उड़ते जो भी मच्छर और पतंगा मुँह में पड़ें उन्हें निगलते जाएँ।



बुरातीनो उसके पीछे-पीछे कन्धों तक ऊँची घास के मैदान में दौड़ रहा था, भीगी हुई तिपतिया घास उसके गालों से टकरा रही थी।

अचानक चमगादड़ गोल-गोल चाँद की ओर सीधा उड़ा और वहाँ से चिल्लाया, "ले आया!"

"बुराई में भी कुछ न कुछ भलाई होती है - गिरे तो, पर देखो मूरखनगरी में पहुँच गए..." लोमड़ी ने कहा और अपने पंजे से एक छोटी-सी सूखी नदिया पर बने टूटे पुल की ओर इशारा किया। नदिया के दूसरे किनारे पर कूड़े के ढेरों के बीच छोटे-छोटे खस्ताहाल मकान और टूटी शाखाओंवाले मुरझाए-मुरझाए पेड़ दिखाई दे रहे थे।

"इस नगरी में तुम्हें अपने पापा कार्लो के लिए ख़रगोश की खाल की बढ़िया जैकेट मिलेगी," होंठों पर जीभ फेरते हुए लोमड़ी कह रही थी। "सुन्दर-सुन्दर चित्रों से भरपूर ककहरे भी यहाँ पर हैं ... अहा, कैसी मीठी-मीठी कचौड़ियाँ और बढ़िया-बढ़िया लालीपाप बिकते हैं यहाँ! अरे हाँ, तू ने सिक्के तो संभालकर रखे हैं न?"

लोमड़ीअलीसा ने उसे खड़े होने में मदद दी, अपने पंजे से उसकी जैकेट झाड़कर साफ की और ऐन इसी क्षण बुरातीनो खड़ी चट्टान से कलाबाज़ी खाते हुए तेज़ी से लुढ़का। वह लुढ़कते-लुढ़कते झाड़-झंखाड़ में जा गिरा। उसके सारे शरीर पर खरोंचें आ गई थीं, मुँह में धूल भर गई थी और आँखें फटी-फटी रह गई थीं।

"बाप रे!" उठते हुए वह बोला और तभी देखता क्या है कि उसके सामने बिल्ला बज़ीलिओ और लोमड़ी अलीसा खड़े हैं।

"बहादुर, जाँबाज़ बुरातीनो सीधा आसमान से यहाँ टपका है," लोमड़ी ने कहा।

"कमाल है, बच कैसे गया," खिन्न होकर बिल्ले ने कहा।

बुरातीनो अपने पुराने परिचितों को देखकर खुश हुआ हालाँकि उसे यह अजीब लगा कि बिल्ले

के दाएँ पंजे पर कपड़ा लिपटा हुआ है और लोमड़ी की सारी दुम कीचड़ में सनी हुई है।

लोमड़ी अलीसा ने उसे खड़े होने में मदद दी, अपने पंजे से उसकी जैकेट झाड़कर साफ़ की और उसे अपने साथ लेकर टूटे-फूटे पुल के उस पार चल दी।

पीछे-पीछे बिल्ला बज़ीलिओ उदास मन से डगमगाता हुआ चल रहा था।

आधी रात हो चुकी थी, लेकिन मूरखनगरी में अब तक सभी जाग रहे थे।

गन्दी टेढ़ी-मेढ़ी गली में मरियल कुत्ते दर-दर भटक रहे थे। उनके सारे बदन पर गोखरू उलझे हुए थे और वे भूख से बेहाल होकर जंभाइयाँ ले रहे थे, "हा-य-य!"

नुचे हुए बालोंवाली बकरियाँ फुटपाथ पर धूलसनी घास चर रही थीं और अपनी कटी दुमें हिला रही थीं।

"मैं-एं-म-अ-अ-री!"

हड्डियों का ढाँचा बनी गाय सिर झुकाए खड़ी थी। "आ-आ-ह..." वह रह-रहकर रंभा उठती थी।

नुचे-खुचे पंखोंवाली गौरैयाँ कूड़े के ढेरों पर बैठी हुई थीं - वे उड़ती ही नहीं थीं, चाहे कोई उन्हें रौंद ही डाले।

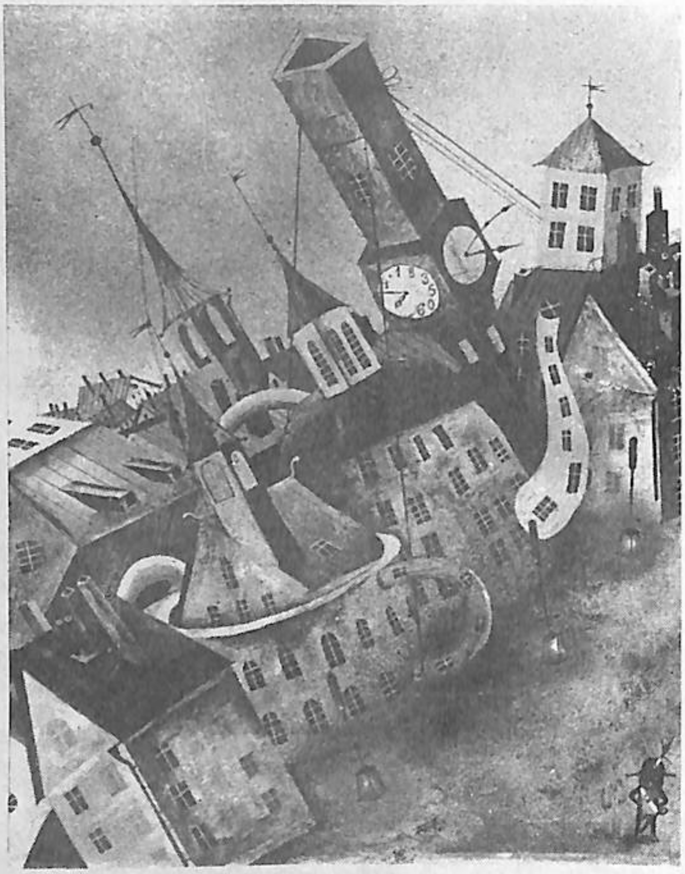
भूख से बेहाल नुची दुमवाली मुर्गियाँ लड़खड़ाती जा रही थीं।

लेकिन चौराहों पर तिकोनी टोपी लगाए बुलडॉग-पुलिस तैनात थी। बुलडॉगों के गले पर विशेष क़िस्म के काँटेदार पट्टे कसे हुए थे।

वे भूखे, रूखे और खुजली से तंग राहगीरों पर भौंक रहे थे, "आगे बढ़ो, आगे! सीधे चलो! चलते जाओ!"

लोमड़ी बुरातीनो को घसीटती हुई आगे बढ़ चली। चाँदनी रात में उन्होंने सुनहरा चश्मा लगाए बिल्लों को देखा, जो बिल्लियों के साथ बाँहों में बाँहें डालकर चहलकदमी कर रहे थे।

इस नगरी के गवर्नर लोमड़ साहब शान से



नाक ऊँची उठाए टहल रहे थे। बगल में उनके साथ-साथ लोमड़ी साहिबा गर्व से तनकर चल रही थीं, वह अपने हाथ में फूल लिए थीं।

लोमड़ी अलीसा फुसफुसाई, "देखो, इन सब लोगों ने अपनी दौलत चमत्कारों के मैदान में बोई थी। आज बोवाई की अन्तिम रात है। सुबह ढेरों दौलत बटोर लेना और फिर मज़े से तरह-तरह की चीज़ें ख़रीदना ... आओ, जल्दी-जल्दी चलते हैं।"

लोमड़ी और बिल्ला बुरातीनो को साथ लेकर एक ख़ाली मैदान में पहुँचे, जहाँ टूटे-फूटे बर्तन, फटे-पुराने जूते और चिथड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे ... एक दूसरे की बात काटते हुए वे जल्दी-जल्दी कहने लगे,

"गड्ढा खोदो!"

"सोने के सिक्के गाड़ दो!"

"नमक डाल दो!"

"अच्छी तरह पानी दो!"

"और हाँ, 'अन्तर, मन्तर, छूमन्तर' ज़रूर कहना, भूलना मत, समझे!"



बुरातीनो ने नाक खुजलाई जो स्याही लगने से मैली हो गई थी।

"ज़रा हट जाओ तुम दोनों ..."

"अरे भाई, हम तुम्हारी दौलत देखने नहीं आए हैं!" लोमड़ी ने कहा।

"तौबा-तौबा!" बिल्ला बोला।

वे दोनों थोड़ी दूर जाकर कूड़े के ढेर के पीछे छिप गए।

बुरातीनो ने गड्ढा खोदा, तीन बार धीरे-धीरे "अन्तर, मन्तर, छूमन्तर" कहा, फिर गड्ढे के अन्दर सोने के चार सिक्के रख दिए। जेब से चुटकी भर नमक निकाला और उसे ऊपर से छिड़क दिया। डबरे से पानी लेकर डाल दिया।

और इस प्रतीक्षा में बैठ गया कि कब दौलत का पेड़ उगेगा ....।

(अगले अंक में जारी)

('सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय, सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोश्किन)

फॉर्म 4 (नियम – 8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान	:	भोपाल
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
प्रकाशक का नाम	:	विनोद रायना
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य ई–1/25, अरेरा कॉलोनी भोपाल – 462 016
मुद्रक का नाम	:	विनोद रायना
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य ई–1/25, अरेरा कॉलोनी भोपाल – 462 016
सम्पादक का नाम	:	विनोद रायना
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एकलव्य ई–1/25, अरेरा कॉलोनी भोपाल – 462 016
उन व्यक्तियों के नाम	:	रेक्स डी. रोज़ारियो
और पते जिनका इस	:	भारतीय
पत्रिका पर स्वामित्व है	:	एकलव्य ई–1/25 अरेरा कॉलोनी भोपाल – 462 016

मैं विनोद रायना यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

1 जनवरी, 1997

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह : भोपाल में



फोटो : दुलदुल बिस्वास

किताबों का एक अनोखा संसार है। किताबें तुम अपनी स्कूल की पढ़ाई के लिए पढ़ते हो, किताबें तुम अपने मनोरंजन के लिए पढ़ते हो, किताबें दुनिया-जहान की बातें जानने के लिए पढ़ते हो, किताबें समय काटने के लिए पढ़ते हो। यानि कि किताबों के बिना यह दुनिया कभी-कभी अधूरी-सी लग सकती है।

लेकिन यह भी उतना ही सच है कि आजकल धीरे-धीरे किताबें पढ़ने के प्रति रुझान कम होता जा रहा है। अधिक से अधिक किताबों की मौजूदगी स्कूल तक ही रह गई है। और स्कूल की किताबें भी ऐसी कि जिन्हें देखकर ही तुम्हारा मन उचाट हो जाता है। दूसरी तरफ आज टेलीविज़न जिस तरह से घरों में जा घुसा है, उसने लोगों के ख़ाली समय पर क़ब्ज़ा कर लिया है। जहाँ फ़ुरसत मिली लोग टेलीविज़न के सामने जा बैठते हैं।

एक कारण यह भी है कि बहुत सारे लोग किताब पढ़ना भी चाहते हैं, पर उन तक किताबें पहुँच ही नहीं पातीं। कभी किताबें पहुँचती हैं तो वे इतनी महँगी होती हैं कि लोग ख़रीद ही नहीं पाते। ख़ैर ...

किताबें लोगों तक पहुँचें, लोग ख़रीद पाएँ, लोगों में पढ़ने के प्रति रुझान बढ़े, रुचि बढ़े, पनपे। इस सबको बढ़ावा देने के उद्देश्य से हर साल 14 से 20 नवम्बर तक राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का आयोजन किया जाता है।

इसका आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली करता है। नेशनल बुक ट्रस्ट विभिन्न भारतीय भाषाओं

में किताबें छापने वाली एक बड़ी प्रकाशन संस्था है। ट्रस्ट देश के लगभग हर बड़े शहर में वहाँ के स्थानीय पुस्तक प्रकाशकों, विक्रेताओं, स्कूल, पुस्तकालयों तथा किताबों में रुचि रखने वालों के माध्यम से विभिन्न आयोजन करता है।

वर्ष, 1996 में भोपाल में यह आयोजन करने का ज़िम्मा एकलव्य को सौंपा गया। और ट्रस्ट ने कहा कि एकलव्य जैसे चाहे, वैसे उसका आयोजन करे, लेकिन आयोजन में कुछ नयापन हो, रचनात्मकता हो।

सोच-विचार के बाद तय किया गया कि दो दिन की एक स्थायी पुस्तक प्रदर्शनी के अलावा चार अलग-अलग मोहल्लों में भी अलग-अलग दिन पुस्तक प्रदर्शनी लगाई जाए। क्योंकि किसी एक केन्द्रीय स्थान पर लगी प्रदर्शनी देखने के लिए कुछ ही लोग पहुँच पाते हैं। इसके अलावा एक दिन बच्चों की किताबों के सन्दर्भ में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया जाए।

प्रदर्शनी के लिए ऐसे मोहल्ले चुने गए, जहाँ पहले से थोड़ा-बहुत सम्पर्क था, ताकि आयोजन में मदद मिले। यह योजना बनी कि प्रत्येक मोहल्ले में पहले से यह सूचना दे दी जाए कि वहाँ किस दिन प्रदर्शनी लगेगी। यह भी सोचा गया कि प्रदर्शनी स्थल पर एकत्रित होने वाले बच्चों के साथ किताबों पर बातचीत, जो किताब नहीं पढ़ सकते हों, उनको कविता या कहानी सुनाना और फिर कुछ चित्रकारी, कुछ खेल, नाटक आदि भी किया जाए।

14 नवम्बर

तो शुरू हुआ 14 नवम्बर से पुस्तक सप्ताह। सप्ताह के इस पहले दिन भोपाल की गैस पीड़ित बस्ती कांग्रेस नगर में पड़ाव डाला गया।

गैस पीड़ित इलाकों में स्वास्थ्य तथा जनसंगठन का काम करने वाली एक चैरिटेबल ट्रस्ट सद्भावना के कुछ साथी भी हमारे साथ थे। वास्तव में हम उनके सम्पर्क से ही वहाँ पहुँचे थे।

मोहल्ले के बीचोंबीच एक पेड़ के नीचे बने चबूतरे के सामने हमने किताबों के गठ्ठर रख लिए। देखते ही देखते वहाँ कोई सौ बच्चे इकट्ठे हो गए।

हम जो किताबें साथ ले गए थे उनमें ज़्यादातर बच्चों की किताबें ही थीं। हमने पहले एक ही गठ्ठर खोला। बच्चों ने किताबें लीं। कुछ ने किताब को जल्दी-जल्दी उलटा-पलटा और रख दिया। फिर दूसरी किताब ली। कुछ एक किताब लेकर कहीं अलग जा बैठे और पढ़ने में मशगूल हो गए। यह सिलसिला कोई आधा घण्टे चला।



फोटो : तरनजीत बिरदी

फिर ऐसा लगा जैसे बच्चों ने सब किताबें पढ़ लीं, देख लीं। वे किताबें छोड़कर हमारे आसपास इकट्ठे हो गए। और फिर देखते ही देखते चित्रकारी शुरू हो गई। जिसको जहाँ जगह मिली वो वहीं बैठ गया। हर चार-पाँच बच्चों की एक टोली के बीच रंग-बिरंगी पेंसिलों का एक-एक डिब्बा बाँट दिया गया था। एक-एक बच्चे ने चार-चार, पाँच-पाँच चित्र बनाए। एक कागज़ भर जाता तो वे दूसरा ले लेते। पर उनका मन नहीं भरता। दो-ढाई घण्टे के बाद हमने वहाँ से अपना सामान समेट लिया क्योंकि एक और बस्ती में जाना था।

अगली बस्ती थी आरिफ़ नगर। यहाँ एक बड़े -से खेल मैदान के एक छोर पर बने लम्बे चबूतरे के सामने हमने दो टेबिलों पर किताबें फैला दीं। यहाँ कोई दो-ढाई सौ बच्चे जमा हो गए।

हर कोई किताब चाहता था, भले ही पढ़े या नहीं। पर कुछ बच्चे सचमुच पढ़ने में मशगूल हो गए और कुछ किताबों में बने चित्र देखने में। संभवतः इतनी सारी किताबें एक-जगह पर उन्होंने पहली बार देखी थीं। और वह भी उनकी पहुँच के अन्दर। वे जो

किताब चाहें ले सकते थे, उसे मनचाही जगह बैठकर पढ़ सकते थे, देख सकते थे। सचमुच वह एक अकल्पनीय नज़ारा था।

जो बच्चे पढ़ नहीं पा रहे थे, वे हमारे एक साथी से कहानियाँ सुन रहे थे। तो कुछ अन्य बच्चे एक अन्य साथी के साथ बैठकर कविताएँ गुनगुना रहे थे।

बच्चों को नियंत्रित करने के लिए जल्द ही यहाँ भी चित्रकारी शुरू करवानी पड़ी। बच्चे चार-पाँच के समूह में बैठ गए और चित्रकारी शुरू। हमारे एक साथी जो काग़ज़ को मोड़कर तरह-तरह की आकृतियाँ बनाते हैं, उन्होंने कुछ बच्चों को अपने आसपास जमा कर लिया। जल्द ही वहाँ मोर, चिड़िया, मेंढक और ऐसी ही तमाम आकृतियाँ बच्चों के हाथ में नज़र आने लगीं।

इस तरह पुस्तक सप्ताह का पहला दिन बीता। इससे यह बात तो स्पष्ट हो गई कि ऐसे अनौपचारिक आयोजन में बच्चों की भागीदारी ही अधिक हो सकती है, बड़ों की शायद नहीं। और यह भी कि बच्चे किताबें पढ़ना चाहते हैं। क्योंकि दोनों बस्तियों में बच्चों की जुबान पर यह सवाल था, 'कि आप फिर कब आएँगे?'



फोटो : तरनजीत बिरदी



फोटो : दुलदुल बिस्वास

15 नवम्बर

दूसरे दिन पड़ाव था पंचशील नगर। यहाँ चकमक क्लब की गतिविधियाँ चलती रही थीं। इनमें एक छोटा पुस्तकालय भी था।

पंचशील नगर के बीचोंबीच एक मन्दिर के सामने पेड़ के नीचे पुस्तक प्रदर्शनी लगी।

यहाँ मोहल्ले में कई सारे प्रायवेट स्कूल हैं। जब इन स्कूलों में आधी छुट्टी हुई तो वहाँ के बच्चे भी आ जुटे। उन्होंने जल्दी-जल्दी किताबों को उल्टा-पुल्टा क्योंकि दुबारा स्कूल जाना था। चूँकि उनके पास उस समय पर्याप्त पैसे नहीं थे, इसलिए उन्होंने यह जानकारी ली कि किताबें बाद में कहाँ मिल सकेंगी।

यहाँ भी बच्चों ने चित्र बनाए, किताबों से देखकर काग़ज़ की आकृतियाँ बनाईं। पहेलियों की किताबों से पहेलियाँ हल की, कविताएँ गाईं और नाटक खेले।

16-17 नवम्बर

पुस्तक सप्ताह के ये दो दिन थे स्थायी पुस्तक प्रदर्शनी के। न्यू मार्केट में स्थित कम्युनिटी हाल परिसर में पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई।



फोटो : टुलटुल विश्वास

इस प्रदर्शनी में भोपाल की स्थानीय संस्थाओं ने अपने प्रकाशन प्रदर्शनी और बिक्री के लिए रखे। जिन्होंने भाग लिया वे हैं म.प्र. साहित्य परिषद, म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, म.प्र. विज्ञान सभा, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, सेक्ट, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर तथा एकलव्य।

एकलव्य के स्टॉल पर नेशनल बुक ट्रस्ट की किताबें भी उपलब्ध थीं। दो दिन चली इस प्रदर्शनी को लगभग हज़ार लोगों ने देखा और किताबें भी ख़रीदीं।

18 नवम्बर

पुस्तक सप्ताह के पाँचवें दिन हम पहुँचे नए भोपाल की एक बस्ती बाँसखेड़ी में।

यहाँ एक संस्था संसाधन विकास संस्थान के परिसर में प्रदर्शनी लगाई। वहाँ एक छोटा-सा स्कूल भी था। स्कूल तथा बस्ती के बच्चे हमारे दर्शक थे। अन्य जगहों की तरह यहाँ भी वही हाल था। पर यहाँ स्कूल की एक-दो शिक्षिकाएँ भी थीं, आदतन उनके हाथ में एक-एक डंडा भी था। जिसका मतलब बच्चे भी समझते थे। फिर भी बीच-बीच में वे थोड़ी देर के लिए अपने-आपको डंडे के आतंक से मुक्त कर लेते थे। और हमारी कोशिश भी यही थी कि वे स्वतंत्रता के साथ किताबें देखें-पढ़ें-पलटें। और एकाध बार हम लोगों को ही अपनी भावना शिक्षिकाओं के सामने व्यक्त करनी पड़ी, तब उन्होंने भी इस बात का ध्यान रखा।

यहाँ बच्चों के एक समूह के साथ कहानी बनाने का एक रोचक दौर भी हुआ। एक बार जब कहानी बननी शुरू हुई तो थमने का नाम ही नहीं लेती थी।

प्रदर्शनी को एक अन्य प्रायवेट स्कूल के बच्चों ने देखा। किताबें ख़रीदीं और चित्रकारी में भाग लिया।

19 नवम्बर

मोहल्ले-मोहल्ले प्रदर्शनी के इस आख़िरी दिन हम भोपाल के भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स कारखाने की एक बस्ती में गए। इस बस्ती में लगभग हफ़्ते भर पहले से सूचना थी, कुछ पोस्टर भी चिपकाए गए थे। और यह योजना भी थी कि कुछ वयस्क भी एकत्रित हुए तो उनके साथ किताबों पर बातचीत होगी।

लेकिन हुआ बिलकुल उल्टा। यहाँ न तो बच्चे ही आए और न ही बड़े। हालाँकि प्रदर्शनी एक सड़क के किनारे लगी थी। सड़क पर आते-जाते लोगों में से भी बहुत कम ने ही प्रदर्शनी की तरफ नज़र डाली।

इस बस्ती में चकमक की एक बाल रचनाकार रहती है। उसने अपनी तरफ़ से भरसक कोशिश की थी कि मोहल्ले के लोग वहाँ आएँ। अलबत्ता वह ज़रूर पूरे समय हमारे साथ रही।

20 नवम्बर

पुस्तक सप्ताह के आख़िरी दिन गाँधी भवन में एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी का विषय था -'बच्चों की किताबों की विषयवस्तु तथा प्रस्तुतिकरण।'

गोष्ठी में लगभग 30 लोगों ने भाग लिया। इनमें बच्चों के लिए लिखने वाले, उनकी रचनाओं तथा किताबों के लिए चित्र बनाने वाले भी शामिल थे।

बातचीत विषय के आसपास घूमती हुई बच्चों के साहित्य की भाषा, विषय, प्रकाशित हो रही बाल पत्रिकाओं के स्तर, बढ़ते टेलीविज़न का प्रभाव, बाल साहित्य लेखक कौन हैं? बाल साहित्य के सन्दर्भ में चित्रकार की भूमिका, बाल साहित्य बड़ों के साहित्य से कैसे अलग है, बच्चों के साहित्य में कौन से विषय या जीवन के पहलू अनछुए हैं आदि पर चर्चा हुई।

बातचीत में बच्चे न के बराबर थे। यह मुद्दा भी उभरा कि ऐसी बातचीत में बच्चों को भी ज़रूर बुलाया जाए। ताकि वे क्या सोचते हैं, क्या पढ़ना पसन्द करते हैं, या नहीं करते हैं यह मालूम हो सके।

समय कम होने के कारण विस्तार से बातचीत नहीं हो पाई। तब भी बच्चों के साहित्य के सन्दर्भ में ऐसे पहलू सामने आए जिन पर गम्भीरता से चर्चा करने की ज़रूरत महसूस हुई।



फोटो : दुलदुल विश्वास

मोहल्लों में लगी प्रदर्शनी के दौरान बच्चों ने जो चित्र बनाए उनमें से कुछ इसी अंक में पृष्ठ आठ; आवरण दो, तीन तथा चार पर प्रकाशित हुए हैं।

तो इस तरह राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का आयोजन हुआ भोपाल में।

रपट : राजेश उत्साही

माथापच्ची : हल दिसम्बर 1996 अंक के

1. चार (4) 2. 56

3. कहानी कुछ यूँ है –

एक दिन दो सफ़ेद चूहे खेल रहे थे। बिल्ली बोली मुझे भी खिलाओ। चूहे बोले नहीं। तुम हमें मार दोगी। बिल्ली बोली हाँ। चूहे बोले भागो। सबसे आगे चूहा, उसके पीछे बिल्ली।

4. शादी के समय मेरी माँ की उम्र आठ साल और पिता की उम्र 14 साल थी। यकीन करोगे?

5. जलदस्यु नं. 1 और 6 जुड़वाँ भाई हैं।

6. आमतौर पर चलती बस से कूदते वक्त हम बस के चलने की दिशा में ही कूदते हैं, है न। पर बोतल को चलती कार से सुरक्षित गिराना हो तो उसे कार की चाल की उलटी दिशा में ही गिराना ठीक है। यानि पीछे की ओर। इससे कार की रफ़्तार और बोतल की रफ़्तार विपरीत होगी। इसके कारण बोतल हल्के धक्के के साथ ज़मीन पर गिरेगी।

वर्ग पहेली – 64 का हल

1 जा	य	2 सी		3 झें		4 प्र	5 ती	क
जि		6 मा	ल	पू	7 आ		ज	
8 म	9 स				10 ल	11 ख	न	12 ऊ
	13 मो	ना	14 ली	सा		ली		स
15 ई	सा		रा		16 पा		17 गि	र
रा		18 आ		19 का	रा	गा	र	
20 क	21 ला	त्म	22 क				23 ह	24 क
	लि		25 द	26 र	बा	27 न		गा
28 धी	मा	न		ज		29 र	डा	र

वर्ग पहेली – 64 का सही हल भेजा है शुभम मित्तल, राजगढ़ (ब्यावरा); एस. एल. चन्द्र, ओड़ेकेरा, बिलासपुर; नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल; उपेन्द्र नायक, चन्दपुर, बिलासपुर; चिरौंजी लाल पटेल, नागतराई, राजनांदगाँव; कौशल्या नायक, मुरा, रायगढ़। **सभी म. प्र.। इन्हें तीन माह तक उपहार में चकमक भेजी जाएगी।**

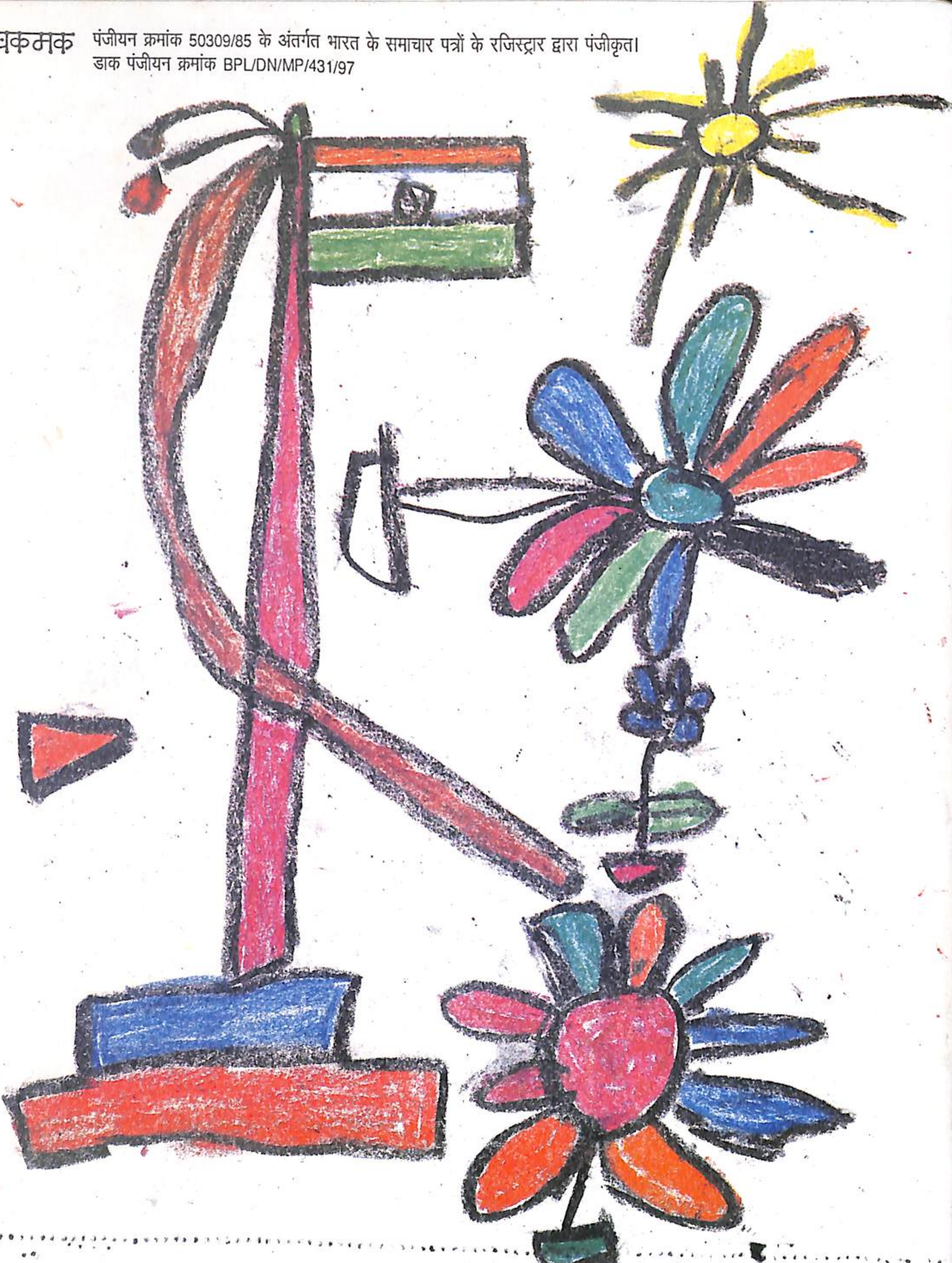


जितेश पाठक, चौथी, मन्दसौर, म.प्र.



फ़ैज़ल, तेरह वर्ष, भोपाल, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/97



नेहा राठौर, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना